पतंजलि विश्वविद्यालय, (हरिद्वार)

पाठ्यक्रम - बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

(According to NEP)

2026-27

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम् (BV)

उद्देश्य :

श्री वामनजयादित्यविरचित पाणिनीय अष्टाध्यायी सूत्रवृत्ति काशिका है। इसमें व्याकरण शास्त्र का सार संग्रह किया गया है, जो अन्यत्र वृत्ति भाष्यादि ग्रन्थों में विस्तृत रूप से था। इसके अध्यापन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं -

- अष्टाध्यायी के सूत्रों का अर्थ, उदाहरण, शब्दसिद्धि तथा सूत्रों में निर्दिष्ट पदों का विस्तृत विवेचनपूर्वक बोध कराना।
- व्याकरण शास्त्र के संस्कृत भाषा सम्बन्धी एवं दार्शनिक सिद्धान्तों से अवगत कराना।
- कात्यायन मुनि प्रणीत वार्तिकों की सप्रसंग अर्थ और उदाहरण सहित व्याख्या का बोध कराना।
- पाणिनिमुनि रचित गणपाठ एवं उसमें पठित गणसूत्रों तथा कारिकाओं का ज्ञान कराना।
- महर्षि पतञ्जलि द्वारा भाष्य में निर्णीत सिद्धान्तों का बोध कराना।
- शब्द शास्त्र का सम्पूर्णता से बोध कराना । यतो हि -

  ''शब्दे ब्रह्मणि निष्णातः परं ब्रह्माधिगच्छति'' इति
- वैदिक साहित्य एवं संस्कृत साहित्य के विविध ग्रन्थों का अध्ययन कराना। जिससे कि अपने वैदिक ग्रन्थों एवं संस्कृत साहित्य का परिचय प्राप्त हो सके।

परिणाम-

- अष्टाध्यायी के सूत्रों का अर्थ उदाहरण शब्दसिद्धि आदि एवं व्याकरण के सिद्धान्तों के बोध से विद्यार्थी संस्कृत भाषा में निर्बाध रूप से गति करता है।
- संस्कृत भाषा के ज्ञान से सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय को समझने व समझाने में समर्थ हो जाता है।
- दर्शन, गीता उपनिषद् आदि के अध्ययन से वैदिक वाङ्मय के मूल सिद्धान्तों से अवगत होकर समस्त मत-पन्थ-सम्प्रदायों में समन्वय स्थापित करता हुआ सभी को मार्गदर्शन देता हुआा राष्ट्रनिर्माण में अपना योगदान देता है।
- दर्शन, गीता, उपनिषद् आदि के अध्ययन से वैदिक वाङ्मय के मूल सिद्धान्तों से अवगत होकर संस्कृत व्याकरण के स्पष्ट बोध से, उच्चारण की शुद्धता एवं वक्तृत्व के विकास से वैदिक ज्ञान का मुखरता के साथ उपदेश करता हुआ समाज में फैली हुई मिथ्या मान्यताओं का निराकरण करता हुआ स्वयं को व समाज को श्रेष्ठ मार्ग की ओर अग्रसर करता है।

B.A. Honours Sanskrit Vyakaranam (According to NEP)

Semester -1

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major	BVSAMJ-101	काशिकावृत्तिः (प्रत्याहारसूत्रसहिता प्रथमाध्यायप्रथमद्वितीयपादौ)	3	1	4	4
2	Discipline Specific Major	BVSAMJ-102	अष्टाध्यायीसूत्राणि (अध्यायः 1-4) भ्वादिगणश्च (लेखनं स्मरणञ्च)	2	0	4	4
3	Discipline Specific Minor	BVSAMN-103	संस्कृतसाहित्यम्-I	3	1	0	4
4	Inter Disciplinary	BVSAID-104 (1)	Human Biology	2	1	2	4
		BVSAID-104 (2)	कथकनृत्यम्	1	0	6	
5	Ability Enhancement	BVSAAE-105 (1)	प्रायोगिकसंस्कृतम्	1	0	2	2
		BVSAAE-105 (2)	Russian				
6	Skill Enhancement	BVSASE-106 (1)	योगचिकित्साविज्ञानम्-I	2	0	2	3
		BVSASE-106 (2)	Basic Knowledge of Music (Vocal & Instrumental)	0	0	6	
		BVSASE-106 (3)	Sanskrit With Technology	1	0	4	
7	Value Added	BVSAVA-107 (1)	सनातनसंस्कृतिबोधः - I	2	1	0	3
		BVSAVA-107 (2)	पर्यावरणविज्ञानम्	2	1	0	
8	Yoga Practical (Non Credit)	BVSAVA-108	प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम्- I	0	0	12	0
						Total Credits	**24**

Semester -II

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major	BVSAMJ-201	काशिकावृत्तिः-प्रथमाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ	3	1	0	4
2	Discipline Specific Major	BVSAMJ-202	अष्टाध्यायीसूत्राणि (अध्यायः 5-8) अदादितश्च कण्वादिगणपर्यन्तम् (लेखनं स्मरणञ्च)	2	0	4	4
3	Discipline Specific Minor	BVSAMN-203	संस्कृतसाहित्यम् -II	3	1	0	4
4	Inter Disciplinary	BVSAID-204 (1)	भरतनाट्यम्	1	0	6	4
		BVSAID-204 (2)	भारतीयदर्शनम् -I (योगसांख्यवेदान्तदर्शनम्)	3	1	0	
5	Ability Enhancement	BVSAAE-205(1)	Communicative English	1	0	2	2
		BVSAAE-205(2)	Japanese	1	0	2	
6	Skill Enhancement	BVSASE-206 (1)	योगचिकित्साविज्ञानम्-II	2	0	2	3
		BVSASE-206 (2)	Intermediate Knowledge of Music (Vocal & Instrumental)	1	0	4	
		BVSASE-206 (3)	कृषिविज्ञानम्	2	0	2	
7	Value Added	BVSAVA-207	सनातनसंस्कृतिबोधः - II	2	1	0	3
8	Yoga Practical (Non Credit)	BVSAVA-208	प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम्- II	0	0	12	0
						Total Credits	**24**
						For those students who want to carry the course for Second year	**48**
						For those students who want to exit in 1st year they need to complete summer training of credit	**4**
						Grand Total	**52**

*** 4 credit over and above of 48 credit to be awarded to those students who want to exit to the course after completing summer training.**

Semester -III

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BVSAMJ-301	काशिकावृत्तिः - द्वितीयोऽध्यायः	3	1	0	4
2	Discipline Specific Major-2	BVSAMJ-302	काशिकावृत्तिः-तृतीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ	4	1	0	5
3	Discipline Specific Major-3	BVSAMJ-303	लिङ्गानुशासनोणादिकोशपारिभाषिकाः (लेखनं स्मरणञ्च)	2	0	4	4
4	Discipline Specific Minor	BVSAMN-304	संस्कृतसाहित्यम् -III	3	1	0	4
5	Inter Disciplinary	BVSAID-305 (1)	Introduction to Journalism & Mass Communication	1	1	0	2
		BVSAID-305 (2)	भारतीयदर्शनम् -II (न्यायमीमांसावैशेषिकदर्शनम्)				
6	Ability Enhancement	BVSAAE-306 (1)	Advance Communicative English	1	0	2	2
		BVSAAE-306 (2)	French				
7	Skill Enhancement	BVSASE-307 (1)	सस्वरः वेदपाठः	0	0	6	3
		BVSASE-307 (2)	Advance Knowledge of Music (Vocal & Instrumental)	1	0	4	
		BVSASE-307 (3)	Computer Applications	0	0	6	
		BVSASE-307 (4)	काव्यरचनाकौशलम्	1	0	4	
8	Yoga Practical (Non Credit)	BVSAVA-308	प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम्-III	0	0	12	0
						Total Credits	**24**

Semester -IV

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BVSAMJ-401	काशिकावृत्तिः (तृतीयाध्यायतृतीयपादः) उणादिकोषश्च	4	1	0	5
2	Discipline Specific Major-2	BVSAMJ-402	काशिकावृत्तिः (तृतीयाध्यायचतुर्थपादः) लिङ्गानुशासनम् , फिट्सूत्राणि च	4	1	0	5
3	Discipline Specific Major-3	BVSAMJ-403	काशिकावृत्तिः (चतुर्थाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ)	3	1	0	4
4	Discipline Specific Major-4	BVSAMJ-404	काशिकावृत्तिः (चतुर्थाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ)	3	1	0	4
5	Discipline Specific Minor-1	BVSAMN-405	वैदिकसाहित्यम् -I	3	1	0	4
6	Ability Enhancement	BVSAAE-406	Spanish	1	0	2	2
7	Yoga Practical (Non Credit)	BVSAVA-407	प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम् -IV	0	0	12	0
						Total Credits	**24**
						For those students who want to carry the course for Third year	**96**
						For those students who want to exit in 2nd year they need to complete summer training of credit	**4**
						Grand Total	**100**

***4 credit over and above of 96 credit to be awarded to those students who want to exit to the course after completing summer training.**

Semester -V							
S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BVSAMJ-501	काशिकावृत्तिः (पञ्चमाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ)	3	1	0	4
2	Discipline Specific Major-2	BVSAMJ-502	काशिकावृत्तिः (पञ्चमाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ)	3	1	0	4
3	Discipline Specific Major-3	BVSAMJ-503	काशिकावृत्तिः-षष्ठाध्यायस्य प्रथमपादः	3	1	0	4
4	Discipline Specific Major-4	BVSAMJ-504	काशिकावृत्तिः-षष्ठाध्यायस्य द्वितीयतृतीयपादौ	3	1	0	4
5	Discipline Specific Minor	BVSAMN-505	वैदिकसाहित्यम् -II	3	1	0	4
6	Internship	BVSASE-506	समन्वितचिकित्सापद्धतिः	0	0	8	4
7	Yoga Practical (Non Credit)	BVSAVA-507	प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम् -V	0	0	12	0
						Total Credits	**24**
Semester -VI							
S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BVSAMJ-601	काशिकावृत्तिः -षष्ठाध्यायचतुर्थपादः	3	1	0	4
2	Discipline Specific Major-2	BVSAMJ-602	काशिकावृत्तिः -सप्तमाध्यायस्य प्रथमद्वितीयतृतीयपादाः	3	1	0	4
3	Discipline Specific Major-3	BVSAMJ-603	काशिकावृत्तिः -सप्तमाध्यायस्य चतुर्थपादः, अष्टमाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ	3	1	0	4
4	Discipline Specific Major-4	BVSAMJ-604	काशिकावृत्तिः - अष्टमाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ पारिभाषिकश्च	2	0	4	4
5	Discipline Specific Minor	BVSAMN-605	ज्योतिषशास्त्रम् , वैदिकसाहित्यञ्च -III	3	1	0	4
6	Research Related Courses/Activities	BVSARE-606	लघुशोधप्रबन्धः	1	0	6	4
7	Yoga Practical (Non Credit)	BVSAVA-607	प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम् -VI	0	0	12	0
						Total Credits	**24**
For those students who want to carry the course for UG Forth year or PG First year							**144**

विषय विशेषज्ञ	विषय विशेषज्ञा	संकायाध्यक्षा	विभागाध्यक्ष
प्रो. ब्रजभूषण ओझा जी विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	प्रो. शिवानी वी. डीन-शास्त्रसंकाय कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय, बैंगलुरू	प्रो. साध्वी देवप्रिया डीन-मानविकी एवं प्राच्यविद्यासंकाय, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार	प्रो. मनोहर लाल आर्य विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

प्रथमसत्रम्

प्रथमपत्रम्- काशिकावृत्तिः (प्रत्याहारसूत्रसहितः प्रथमाध्यायप्रथमद्वितीयपादौ)

Code- BVSAMJ-101, Credit - 4

उद्देश्य :

- लौकिक एवं वैदिक शब्दों का अनुशासन एवं अनुशासन विधि प्रत्याहार बोध प्रदान कर विद्यार्थियों की बुद्धि को सूक्ष्म बनाना ।
- संज्ञा सूत्रों, परिभाषा सूत्रों और स्थानिवद् भाव का बोध कराकर व्याकरण ग्रन्थ में उन सूत्रों का बोध कराना ।
- अतिदेश, स्वर, अशिष्य प्रकरण तथा एकशेष प्रकरण का बोध।

परिणामः

- गुण, वृद्धि, संयोगादि संज्ञाओं को अन्य ग्रन्थों में पहचान कर एक नवीन ग्रन्थ का साहित्य का निर्माण कराने में समर्थ हो जाते हैं।
- संज्ञा सूत्रों का बोध कराने में कुशल होकर एक श्रेष्ठ अध्यापक बनकर विद्यार्थियों को विद्वान बनाने में समर्थ हो जाते है।
- स्वर व अच् के भिन्न-भिन्न भेदों को पहचान कर वेदों में स्वरगान में निपुण हो सकते हैं।
- शब्दरूपों की सिद्धि कर पाते हैं एवं प्रकृति प्रत्यय का यथार्थ बोधन कर सम्भाषणादि में उनका प्रयोग करने में समर्थ हो जाते हैं।

काशिकावृत्तिः (प्रत्याहारसूत्रसहितः प्रथमाध्यायप्रथमद्वितीयपादौ) -

इकाई-1 प्रत्याहारसूत्राणि - अव्ययसंज्ञा पर्यन्तम् (1.1.41) **क्रेडिट-1**

वृद्धिः, गुणः, संयोगः, अनुनासिकः, सवर्ण, प्रगृह्यम्, घु, घ, संख्या षट्, निष्ठा, सर्वनामानि अव्ययम्।

शिसर्वनामस्थानम् (1.1.42) - सर्वनामस्थानम्, विभाषा, सम्प्रसारणम् इत्यादयः ।

इकाई-2 वृद्धसंज्ञा पर्यन्तम् (1.1.74) **क्रेडिट-1**

अतिदेशादयः (स्थानिवदादेशः), टिसंज्ञा, उपधा, वृद्धसंज्ञा इत्यादयः ।

इकाई-3 गाङ्कुटादिभ्यो... (1.2.1)- उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः (1.2.40)पर्यन्तम् **क्रेडिट-1**

गाङ्कुटादिभ्यो...इत्यादीनि अतिदेशसूत्राणि, ह्रस्व दीर्घ प्लुत संज्ञा उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, स्वरसूत्राणि,पर्यन्तम् ।

इकाई-4 अपृक्त एकाल् प्रत्ययः (1.2.41)- ग्राम्यपशुसंघेष्वतरुणेषु स्त्री (1.2.73)पर्यन्तम् **क्रेडिट-1**

उदात्तः, अनुदात्तः, स्वरितः, स्वरसूत्राणि, अपृक्तः, उपसर्जनम्, प्रातिपदिकम् संज्ञा, युक्तवद्भावः अशिष्यप्रकरणं च ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
  प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
  श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर,नई दिल्ली-49।
  ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।
- आख्यातिकः श्रीमत्स्वामीदयानन्दसरस्वती, प्रकाशक- वैदिक पुस्तकालय, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

प्रथमसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

द्वितीयपत्रम्- अष्टाध्यायीसूत्राणि (अध्यायः १-४)

भ्वादिगणश्च (लेखनं स्मरणञ्च)

Code-BVSAMJ-102 Credit-4

उद्देश्य :

- अष्टाध्यायी के मूलसूत्रों का लेखन व कण्ठस्थीकरण करना।
- प्रथमाध्याय से लेकर चतुर्थाध्याय पर्यन्त सम्पूर्ण सूत्रों का स्मरण।
- धातुपाठ में निर्दिष्ट भ्वादिगण की सम्पूर्ण धातुओं का कण्ठस्थीकरण और लेखन करना।

परिणामः

- मूल सूत्र कण्ठस्थीकरण से अध्येता अष्टाध्यायी के वृत्तिग्रन्थों के अध्ययन में कुशल हो जाता है।
- सूत्र स्मरण से छात्र अनुवृत्तियों के माध्यम से सूत्रार्थ करने में निपुण हो जाता है।
- मूल धातुकण्ठस्थीकरण से अध्येता धातुवृत्ति ग्रन्थों के अध्ययन में सक्षम हो जाता है।
- धातुपाठ स्मरण से छात्र धातुपाठ में निर्दिष्ट, आत्मनेपद, परस्मैपद, उभयपद, सेट्, अनिट्, आदि विषयों से अवगत हो जाता है।

इकाई-1 **क्रेडिट-1**

क. अष्टाध्यायी का प्रथमाध्याय ।

ख. धातुपाठ का भ्वादिगण (भू - वज, व्रज गतौ)।

इकाई-2 **क्रेडिट-1**

(क) अष्टाध्यायी का द्वितीयाध्याय,

(ख) धातुपाठ का भ्वादिगण (अट्ट, अतिक्रमण0 - रेवृ, प्लवगतौ)

इकाई-3 **क्रेडिट-1**

(क) अष्टाध्यायी का तृतीयाध्याय

(ख) धातुपाठ का भ्वादिगण (मव्य, बन्धने - अर्ह पूजायाम्)

इकाई-4 **क्रेडिट-1**

(क) अष्टाध्यायी का चतुर्थाध्याय।

(ख) धातुपाठ का भ्वादिगण (द्यूत् दीप्तौ-टुओश्वि, गतिवृद्ध्योः)

पाठ्यपुस्तकम्-

1. अष्टाध्यायीसूत्रपाठः एवं धातृपाठ

प्रकाशक : दिव्य प्रकाशन पतंजलि योगपीठ

प्रथमसत्रम्

द्वितीयपत्रम्- संस्कृतसाहित्यम्- I

Code- BVSAMN-103, Credit – 4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- काव्यदीपिका द्वारा काव्य का सामान्य परिचय, प्रयोजन, शक्तिस्वरूप का बोध कराकर प्राचीन साहित्य की मर्मज्ञता का बोध कराना।
- अश्वघोष विरचित बुद्धचरितम् के माध्यम से शास्त्रीय शैली युक्त काव्य का बोध उत्पन्न करना।
- उपनिषद् एवं गीता के माध्यम से ज्ञानमार्ग, कर्ममार्ग एवं निष्कामकर्म योग का ज्ञान कराना।

परिणामः

- काव्य प्रयोजन/लक्षण और शक्ति त्रय को जानने से छात्र स्वकाव्य निर्माण में दक्ष होकर नव नूतन स्वरचना की ओर अग्रसर होता है।
- बुद्धचरितम् के माध्यम से भगवान् बुद्ध के जीवन में निहित जीवन मूल्यों को धारण करने हेतु अग्रसर होता है।
- उपनिषद् एवं गीता में निहित ज्ञान से स्वयं एवं समाज को श्रेष्ठ बनाता है।

इकाई 1- काव्यशास्त्रम् (काव्यदीपिका शिखा 1-2) **क्रेडिट-1**

काव्यशास्त्रोद्भवसामान्यपरिचयः
काव्यप्रयोजनलक्षणे, शक्तिस्वरूपनिरूपणम्

इकाई 2- नाटकम् (बुद्धचरितम्) **क्रेडिट-1**

(क) नाटकोद्भवः/ कविपरिचयः **(ख) पात्रपरिचयः/ श्लोकव्याख्या**
(ग) चरित्रचित्रणम्/ अंकसारः

इकाई 3- उपनिषद्- (ईशोपनिषद्) **क्रेडिट-1**

सर्वत्र ईशदृष्टिः, कर्मविधिः, अभेददृष्टिः, ज्ञानमार्गः, कर्ममार्गः
(क) कण्ठस्थीकरणम् (ख) विषयात्मकप्रश्नाः

इकाई 4- गीता- अध्याय- 3 **क्रेडिट-1**

ज्ञानयोगः, निष्कामकर्मयोगः, अनासक्तभावेन, नियतकर्मणाम् श्रेष्ठता निरूपणम्,
लोकसंग्रहार्थं कर्मणः निष्पत्तिः, भगवते च कर्मणः अर्पणमित्यादि ।
(क) श्लोककण्ठस्थीकरणम् (ख) पदपदार्थज्ञापनम्

पाठ्यपुस्तकम्-

1. काव्यदीपिका- विद्यारत्नकान्तिचन्द्रभट्टाचार्येण संगृहीता, प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि. देहली ।
2. बुद्धचरितम् - प्रकाशकः- दिव्यप्रकाशन, दिव्ययोगमन्दिर ट्रस्ट पतंजलि योगपीठ।
3. एकादशोपनिषद् - डॉ. सत्यव्रतसिद्धान्तालंकार
4. श्रीमद्भगवद्गीता, प्रकाशकः- दिव्यप्रकाशन, दिव्ययोगमन्दिर ट्रस्ट पतंजलि योगपीठ।

प्रथमसत्रम्

चतुर्थपत्रम्- Human Biology

Code- BVSAID-104 (1) Credit - 4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

Objective:-

Anatomical and physiology terms: 1. An introduction to anatomical terms and planes
2. Body systems: A brief outline of the body's different systems

Unit 1: Cell and Skeletal System (12 hours)

- Cell: Definition, Prokaryotic vs Eukaryotic, Structure & Organelles.
- Cell membrane physiology with transportation of various substance across cell membrane.
- Types of bones, features, functions, and anatomical terms.
- Bone cells: Types & Functions
- Joints: Synovial Joints Types, Structures, Movements
- Spine and Vertebral Column
- Yogic Perspective: Effect of yoga asanas on skeletal alignment and bone health.

Unit 2: Muscular System (12 hours)

- Types of muscles: Skeletal, Cardiac, Smooth
- Muscle Anatomy & Physiology
- Neuromuscular junction, Muscle fatigue.
- Physiology of muscles contraction.
- Yogic Perspective: Effects of yoga postures on muscle tone, flexibility, and endurance

Unit 3: Respiratory System (12 hours)

- Gross Anatomy of Respiratory Tract.
- Function of respiratory system.
- Mechanics of Breathing,
- Exchanges and transport Gases.
- Control of Respiration.
- Lung volume and capacities.
- Yogic Perspective: Pranayama and its effect on lung capacity, oxygen utilization

Unit 4: Cardiovascular System (12 hours)

- Structure and functional anatomy of cardio vascular system, Heart, Blood vessels, Valves, types of circulation.
- Blood Composition, Function of blood, ABO blood group system.
- Structure, Types & Function of Hemoglobin.
-Cardiac cycle and heart sound.
- Systemic arterial blood pressure and its control.
- Stroke volume, cardiac output and venous return.
- Yogic Perspective: Role of yoga in circulation, heart rate, and cardiac health

Unit 5: Lymphatic and Immune System (12 hours)

- Lymphoid Organs: Thymus, Spleen, Bone Marrow
- Lymph Composition and Flow
- Innate vs Acquired Immunity
- Antigen, Antibody, Autoimmunity
- Yogic Perspective: Yoga’s role in immune modulation and detoxification

Practical Syllabus

Unit 1: Osteology & Myology Demonstration
- Identification of bones and muscles using charts, models, and cadaver images
- Palpation and surface anatomy demonstration

Unit 2: Cardiopulmonary Organs & Viscera Demonstration
- Charts, plastinated models, and organ specimens.
- Determination of ABO blood group and Rh.
-Recording of blood pressure in human beings and study of effects of exercise on blood pressure.
- Demonstration of Electro cardiograph (ECG)
- Demonstration of Spirometry.
- Functional correlation with yogic breathing and heart health

Unit 3: Bones and Joints Demonstration
- Movements of joints (flexion, extension, rotation)
- Types of joints with yoga-based movement analysis

Unit 4: Human Skeleton Demonstration
- Full skeletal articulation
- Postural analysis in relation to yoga poses

Books and References

- Tortora, G.J. & Derrickson, B.N. (2009). Principles of Anatomy and Physiology (14th ed.). Wiley.
- Guyton, A.C. & Hall, J.E. (2006). Textbook of Medical Physiology (11th ed.). Elsevier.
- Ross & Wilson. (2010). Anatomy and Physiology in Health and Illness (11th ed.). Elsevier.
- Pandya, K.K. (1998). Human Anatomy. Varanasi: Krishnadas Academy.
- Frawley, D., & Kozak, S.S. (2006). Yoga for Your Type. New Age Books.
- Kaminoff, L. (2007). Yoga Anatomy. Human Kinetics.
- Udupa, K.N. (2007). Stress and Its Management by Yoga. Motilal Banarasidas.
- Robin, Mel. (2002). A Physiological Handbook for Teachers of Yogasana. Fenestra.
- Ramdev, S. (2006). Yoga Sadhana & Yoga Chikitsa Rahasya. Divya Prakashan.
- McCall, T. (2007). Yoga as Medicine. Bantam Dell.
- Khalsa, S., Cohen, L., Call, T. & Telles, S. (2016). The Principles and Practice of Yoga in Health Care. Handspring Publishing.
- Balkrishna, A. (2007). Yoga in Synergy with Medical Science. Divya Prakashan.

प्रथमसत्रम्

चतुर्थपत्रम - कथकनृत्यम्

Code- BVSAID-104 (2) Credit-4

Learning Objective

The Introductory level course aims to:

1. Provide foundational knowledge of Kathak technique, history and aesthetics.
2. Develop basic body alignment, posture, hand movements and footwork.
3. Introduce the student to taal structure, layakari and Kathak repertoire.
4. Build confidence in stage performance, expression and classroom discipline.
5. Nurture sensitivity towards Indian cultural values and the guru–shishya learning tradition.

Learning Outcomes

By the end of the course, the learner will be able to:

- Demonstrate basic tatkaar and bhramari with correct posture and rhythm.
- Present elementary nritta sequences with understanding of taal and laya.
- Identify Gharanas, repertoire parts and basic terminologies of Kathak.
- Perform a short Vandana / Thumri / Gat-Bhava with introductory Abhinaya.
- Integrate theoretical learning into practical performance and classroom discipline.

Course Structure

Unit	Content Focus
Unit 1 (Theory)	Introduction to Indian Classical Dance system; origin and development of Kathak; contribution of temple & court tradition to the evolution of Kathak.
Unit 2 (Theory)	Basic Kathak terminology – Nritta, Nritya, Natya, Taal, Laya, Matra, Theka; Introduction to Gharanas – Lucknow, Jaipur & Banaras (distinctive features); Repertoire components – Thaat, Aamad, Tatkaar, Tihai, Chakri, Gat.
Unit 3 (Practical)	Body conditioning, posture, torso & hand movement alignment; Eye & neck exercises; Basic Tatkaar (single, dugun, chaugun); Teentaal padhant and theka recitation; Thaat + Aamad + simple Toda–Tukda + Tihai.
Unit 4 (Practical)	Chakkars (slow and madhya laya), Vandana / Krishna / Shiva / Devi presentation OR basic Gat–Bhava; Stage discipline, padhant, salutation, basic costume and stage presence.

Assessment Pattern

Component	Weightage
Theory (Written / Viva)	30%
Practical Internal	20%
Final Practical Performance	50%

Detailed Study Material (Reference Books)

Title	Author	Publisher	Place	Year
Kathak Darpan	Pt. Birju Maharaj	Arya Book Depot	New Delhi	1994
Natyashastra (Selected Chapters)	Bharat Muni	Munshiram Manoharlal Publishers	New Delhi	2018 (Reprint)
Kathak Nritya Ka Itihas	Dr. Puru Dadheech	Lokbharti Prakashan	Allahabad	2001
Nritya Sarvasva	Pt. Rohini Bhate	Sharada Prakashan	Pune	1998
Abhinaya Darpan	Nandikeshwar	Khemraj Shrikrishnadas Publishing	Mumbai	2010 (Reprint)
Indian Classical Dance: Tradition in Transition	Kapila Vatsyayan	Abhinav Publications	New Delhi	1977

प्रथमसत्रम्

पूर्णाङ्काः-50
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-37
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-13
समयः-होराद्वयम्

पञ्चमपत्रम् - प्रायोगिकसंस्कृतम्

Code- BVSAAE-105 (1) Credit-2

Course Objective:
The course will be able to,
Equip learners with the ability to engage in basic conversations in Sanskrit on everyday topics, such as greetings, introductions, and common social interactions.
Improve learners' ability to understand spoken Sanskrit in various conversational contexts.
Improve learners' ability to read, write and understand the basic Sanskrit writings.

इकाई प्रथम- भाषा परिचयः (10 घण्टे)

संस्कृतभाषापचियः, स्वपरिचय, संख्या शब्दरूपाणि - राम, हरि, गुरु, सीता, पुस्तक जगत्, भगवत्, राजन्, तद् (त्रिलिंगेषु), किम् (त्रिलिंगेषु)। धातुरूपाणि - भू, पठ्, लिख्, गम्, कृ, वह, हस्, सेव्, (लट्, लृट, लोट्, लङ्., विधिलिङ्. मात्रम्) सन्धि परिचय - विसर्गसन्धिः, अचसन्धिः, हल्-सन्धिः।

इकाई द्वितीय- वाक्यरचना (11 घण्टे)

वर्तमानकालः (प्रथमपुरुष, एकवचनम्, बहुवचनम्, उत्तमपुरुष) संख्या, भविष्यत्कालः, भूतकालः,कालपरिवर्तनम्, समयः, देहाङ्गानि लिङ्गभेदः, विभक्तिभेदः, विशेषणम्, अव्ययम्, बन्धुवाचकाः।

इकाई तृतीय- प्रसङ्गवाचनम् (10 घण्टे)

अभिवादनम्, नैतिक-मूल्यानि, विद्यालयस्य कक्षाणाञ्च नियमाः कक्षानिर्देशाः (चयनितवाक्यानि), कक्षासम्भाषणम् (चयनितवाक्यानि), दैनिकचर्या।

इकाई चतुर्थ- संस्कृतलेखनम् १ (7 घण्टे)

वेदवेदाङ्गानां महत्वम्, मुखं व्याकरणं स्मृतम्, उपनिषदां महत्वम्, संस्कृतभाषायाः महत्वम्, संस्कृतस्य रक्षार्थं प्रसारार्थं चोपायाः

इकाई पञ्चम- संस्कृतलेखनम् २ (7 घण्टे)

भारतीयदर्शनानां महत्वं वैशिष्ट्यं च, नास्ति सांख्यसमं ज्ञानम्, एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति, नास्ति योगसमं बलम्, पुराण लक्षणम् तेषां महत्वं च।

निर्धारितग्रन्थाः

1. संस्कृतस्वाध्यायः-वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, नई दिल्ली।
2. अध्यापकैः छात्रैः च प्रयुज्यमानानि हिन्दी-आङ्ग्ल-संस्कृतभाषाणां सामान्यवाक्यानि।, बाबा-भूमनशाह-विद्यामन्दिरम् साधना-केन्द्र-आश्रमः, देहरादूनम्।

सन्दर्भग्रन्थाः

1. वाक्यव्यवहारावलिः-श्रीमद्दयानन्दकन्यागुरुकुलम्, चोटीपुर
2. संस्कृतनिबन्धशतकम्, लेखक- डॉ0 कपिल द्विवेदी, प्रकाशन-विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी

Course Outcomes:
After completing the course, students will be able to,
Hold simple dialogues, ask and answer questions, and respond appropriately in social settings using basic Sanskrit vocabulary and sentence structures.
Comprehend and interpret short spoken passages, identify key information, and follow along with basic conversations in Sanskrit. Write on various topics in simple Sanskrit.

प्रथमसत्रम्

चतुर्थपत्रम्- Russian

BVSAAE-105 (2) Credit-2 Hours : 30

पूर्णाङ्काः-50
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-37
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-13
समयः-होराद्वयम्

RUSSIAN LANGUAGE (CERTIFICATE COURSE)	
Course Objectives: * Provide students with foundational knowledge of elementary Russian grammar. * Develop essential conversational skills in the Russian language. * Build proficiency in reading and comprehension of Russian texts. * Enable students to perform basic translations between Russian and English. * Establish correct pronunciation using the Russian stress system and intonation patterns.	
Unit 1: Russian I – Phonetics and Basic Sentences	
Topics	**Prescribed Texts**
Introduction of alphabets (Vowels/Consonants) and sounds	Russian for Beginners by Y.G. Ovsienko
Pronunciation Rules: Stress system and reduction of vowels	Russian in Exercises by S.A. Khavronina
Voiced/Voiceless consonants and Intonation constructions (IC)	Russian by V.N. Wagner and Y.G. Ovsienko
Simple sentence formation	Russian in Exercises by S.A. Khavronina and Russian by V.N. Wagner and Y.G. Ovsienko
Unit 2: Russian I (Cont.) – Grammar Fundamentals	
Topics	**Prescribed Texts**
Gender of Nouns and Personal/Possessive pronouns	Russian for Beginners by Y.G. Ovsienko
Interrogative words ("кто", "что", "где")	Essential Russian by Abhai Maurya
Declension of nouns and adjectives (Nominative, Prepositional, Accusative)	Road to Russia (Elementary Level 1.1)
Vocabulary: About me, My house, Family, Food, and Shopping	Russian for Beginners by Y.G. Ovsienko
Unit 3: Russian II – Intermediate Grammar and Tenses	
Topics	**Prescribed Texts**
Declension in Dative, Genitive, and Instrumental cases (Singular)	Russian in Exercises by S.A. Khavronina
Use of Numerals and Ordinal numbers	28 Russian Lessons for Beginners by Miller & Politova
Simple Future and Past Tense usage	Russian for Beginners by Y.G. Ovsienko
Modal verbs (должен, мочь)	Russian for Beginners by Y.G. Ovsienko

Unit 4: Russian III – Advanced Communication

Topics	Prescribed Texts
Direct/Indirect speech and Complex sentences	Russian by V.N. Wagner and Y.G. Ovsienko
Aspects of verbs and Verbs of Motion	Russian by V.N. Wagner and Y.G. Ovsienko
Translation (Russian to English and vice versa)	Essential Russian by Abhai Maurya
Topics: My University, Traveling, and Telling Time Self-introduction	Russian by V.N. Wagner and Y.G. Ovsienko

Unit 5: Russian IV – Advanced Communication

Topics	Prescribed Texts
Verb of motion (one-direction and multi-direction), Future tense	Russian by V.N. Wagner and Y.G. Ovsienko
Vocabularies	Russian by V.N. Wagner and Y.G. Ovsienko
Translation and grammar practice	Russian in Exercises by S.A. Khavronina

Russian Language: Course Outcomes

By the end of this course, students will have developed a foundational proficiency in the Russian language, enabling them to navigate both academic and real-world scenarios. Specifically, students will be able to:

* Phonetic Mastery: Accurately identify and pronounce all characters of the Cyrillic alphabet, demonstrating a command of Russian phonetic sounds and intonation patterns.
* Functional Communication: Engage effectively in essential interpersonal exchanges, including sharing personal information, conducting transactions while shopping, and discussing daily routines.
* Grammatical Precision: Apply the correct grammatical declensions for nouns, adjectives, and pronouns across the Russian case system to ensure structural accuracy in speech and writing.
* Literacy and Translation: Read, comprehend, and translate foundational Russian texts, identifying key themes and vocabulary in context.
* Social Navigation: Confidently manage practical social interactions, such as ordering at restaurants, requesting directions, and providing detailed descriptions of people and environments.

Method of Teaching & Assessment

* Digital Integration: Curated internet resources and interactive platforms are used to reinforce grammar and vocabulary through real-time application.
* Multimedia Engagement: Specialized YouTube channels and audiovisual content are integrated to expose students to native speakers, diverse accents, and contemporary cultural contexts.
* Continuous Assessment: Student progress is monitored through a combination of written exercises, oral examinations, and listening comprehension tasks to ensure all learning outcomes are met.

प्रथमसत्रम्

षष्ठपत्रम्- योगचिकित्साविज्ञानम्-I

Code- BVSASE-106 (1) Credit-3

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धति के समन्वित् स्वरूप का बोध कराना ।
- समन्वित चिकित्सा पद्धति के व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा साध्य एवं असाध्य रोगो का निदान।
- योग, आयुर्वेद, पञ्चकर्म, षट्कर्म, नेचुरोपैथी, आहार चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, एक्यूपंचर, एक्यूप्रेशर एवं फिजियो थैरेपी जैसे समन्वित् भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धतियों के सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक बोध द्वारा योग्य एवं प्रशिक्षित व्यक्तित्व का निर्माण करना।

परिणाम :

- समन्वित चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षित विद्यार्थी समाज में साध्य-असाध्य रोगों से पीडित रोगियों को उपचार देकर उन्हें सम्पूर्ण आरोग्य का लाभ प्रदान करता है एवं भारतीय पुरातन चिकित्सा व्यवस्था के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है ।
- सेवानिष्ठ आजीविका का आलम्बन लेकर स्वयं आत्मनिर्भर होता हुआ अन्यों को भी रोजगार परक सेवा क्षेत्र में नियोजित करता है, उपकार परख उपचार की एक स्वस्थ परम्परा का संवाहक बनकर समाज को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के मार्ग पर अग्रसर करता है ।

इकाई 1- योग एवं स्वास्थय, आयुर्वेद एवं स्वास्थ्य

इकाई 2- आहार चिकित्सा

इकाई 3- व्याधियों के अनुसार पथ्यापथ्य

इकाई 4- प्राथमिक चिकित्सालय अथवा रसोई घर

पाठ्यपुस्तकम्-

उपचार पद्धति, प्रकाशन- द्विव्य प्रकाशन, द्विव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, हरिद्वार।

प्रथमसत्रम्

षष्ठपत्रम्- Basics Knowledge of Music (Vocal & Instrumental)

Code- BVSASE-106 (2) Credit-3

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

Objective-

1. Understand the fundamental concepts of music, including its origins, methods, types, and forms
2. Explore the nature of sound, its origin, and the elements of music such as notes, pitches, and rhythm. Learn about concepts like Shruti, Swar, Andolan, Laya, and Taal, including their types and characteristics. Gain knowledge of basic musical notes, scales, and octaves.Practice to Sing five Bhajans.
3. Understand the concept of Raag, its rules, classifications, and basic characteristics. Identify the ten Thaats and learn about their significance in Raag classification. Recognize three Raags belonging to each of the ten Thaats.
4. Study the lives and contributions of prominent musicians.

UNIT- I Basic Knowledge & Definition of Music, Its Origin, Its Methods, Brief about Uttar bhartiya & Carnatic Music , Margi /Desi Sangeet. **12 Hours**

UNIT- II Sound, Origin of Sound, Nada, Types of Nada (Aahat/Anahat), Shruti, Swar, Types of Swar, Andolan, Knowledge of 7 Basic Notes & 5 vikrit Notes, Saptak,Types of Saptak.
Bhatkhande Swarlipi padhhati, **Definitions**: Alankar, Matra, Sama, Laya, sthai, Antra, **Kulgeet of UOP**,
5 Alankars (According to Bhatkhande kramik Pustak Malika-1),
Relation between Music & Yog, Basic Knowledge of Music Therapy & Its Benefits. Basic Music Related Five shlokas from the Book Raag & Taal Parichay Bhaag –All Parts, Basic Introduction of **"TeenTal",** Labeled Diagram of Harmonium, Labeled Diagram of Tabla, An Elementry introduction of types of instruments- Tatta , Sushir, Avanaddha, Ghana.
12 Hours

UNIT- III Practice of "AUM" in Kharaj, Breathing Exercise to improve Voice Range and Vocal exercise of 5 Alankars (According to Bhatkhande kramik Pustak Malika-1), Practice of Twelve Swars in Saptak,Practice of Two Bhajan,One Patriotic Song,Kulgeet, Five Swastivachan Mantra, Practice of Musical Meditation in Primary stage for Concentration. **12 Hours**

UNIT- Iv **Harmonium:-** Playing Skills of Yagya Prarthna, One Bhajan.
Tabla:- Elementry Practice of Some Tabla Bols(Na Ti Teen, Dha Dhi Dheen), Musical Chart Paper/Model. **9 Hours**

Outcomes:-

1. Students will know what music is, where it comes from, and the different types it can have.
2. Students will understand how sound works and learn about notes, pitches, and how they change in music.They will learn about concepts like Shruti, Swar, Andolan, Laya, and Taal, including their types and characteristics.Students will acquire knowledge of basic musical notes, scales, and octaves, and practice singing five Bhajans.
3. Students will learn about Raag, its rules, and different types, helping them appreciate Indian classical music better.

Students will discover the lives of famous musician and understand their importance in music history.

Reference Books - 1. Sangeet Rachna Ratnakar Part -1 - Rajkishor Prasad Sinha(Author)
2. Raag Parichaya Part -1 to 4 – Harishchandra Srivastava(Author)
3. Sangeet Prasnottar Part-1
4. Taal Parichaya –All Parts - Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
5. Adarsh Tabla Prashnotari Part-1- Dr. Rubi Shrivastava
6. Sangeet Praveshika- Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
7. Kramik Pushtak Mallika Part –All Parts – V. N. bhatkhande
8. Bhartiya Sangeet Itihas – Umesh & Jaydev Joshi
9. Sangeet Vadya -Ragmani

प्रथमसत्रम्

षष्ठपत्रम्- Sanskrit with Technology

Code- BVSASE-106 (3) Credit-3

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

Objectives:

- Introduce students to the basic concepts of computers and the fundamental tasks of the computers.
- Provide students with knowledge of computer networks, the internet, and how to use web browsers and electronic mail effectively for academic and personal purposes.
- Enable students to use word processing, spreadsheet, and presentation software effectively.
- Introduce students to online tools for Sanskrit learning and practice, including typing, transliteration, and other Sanskrit-specific applications.

Unit 1 Computer Fundamentals (8 hours)

What is Computer, Basic Applications of Computer; Components of Computer System, Computer Memory, Concepts of Hardware and Software; What is an Operating System; Basics of Popular Operating Systems; The User Interface, Folders and Directories, Creating and Renaming of files and folders, Opening and closing of different Windows.

Unit 2 Introduction to Internet, WWW and Web Browsers (7 hours)

Basic of Computer networks; LAN, WAN; Concept of Internet; Applications of Internet; connecting to internet; World Wide Web; Web Browsing software, Basics of electronic mail

Unit 3 Understanding Word Processing/MS Office (12 hours)

Word Processing Basics; Opening and Closing of documents; Formatting of text; Table handling; Spell check,

Using Spread Sheet: Basics of Spreadsheet; Manipulation of cells; Formulas and Functions; Editing of Spread Sheet,

Making Small Presentation: Basics of presentation software; Creating Presentation; separation and Presentation of Slides; Slide Show; Taking printouts of presentation / handouts.

Unit 4 Online Sanskrit Tools (6 hours)

Samsâdhanî, Sambhâcâ, Sanskrit Heritage, Tools by IIT Kharagpur

Unit 5 Practical Sanskrit (12 hours)

Sanskrit Typing and Transliteration (Roman Diacritics)

Outcomes:

- After successfully completing the course, Students will be able to
- 1.Identify the components of a computer system and effectively manage files and folders within an operating system.
- 2.Demonstrate the ability to connect to the internet, browse the World Wide Web using web browsers, and use email systems efficiently for communication and information gathering.
- 3.Create and format the documents in Word, work with spreadsheets in Excel, and prepare presentations using PowerPoint, including the use of basic functions and formulas.
- 4.Develop proficiency in typing Sanskrit, using Roman Diacritics for transliteration, and applying online Sanskrit tools for enhanced language learning and practice.

References:

· Fundamentals of Computers by Rajaraman V
· Computer Fundamentals by P K Sinha

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

प्रथमसत्रम्

सनातनसंस्कृतिबोध-I

Code- BVSAVA-107 (1) Credit-3

उद्देश्य

- ऋग्वेद एवं यजुर्वेद के चयनित सूक्त एवं मन्त्रों से अवगत कराना।
- वैदिक षड्दर्शनों का सामान्य परिचयात्मक ज्ञान कराना।
- गीता एवं उपनिषद् के प्रसिद्ध प्रसंगों का बोध कराना।
- भारतीय नीति ग्रन्थों एवं षोडश संस्कारों से अवगत कराना।

परिणाम : -

- वेद के कतिपय प्रसिद्ध सूक्त एवं मन्त्रों का शुद्धतापूर्वक वाचन एवं व्याख्यान करने में विद्यार्थी समर्थ हो जाता है।
- वैदिक षड्दर्शनों के सिद्धान्तों के तुलनात्मक विश्लेषण में दक्ष हो जाता है।
- गीता एवं उपनिषद् के उपर्युक्त चयनित प्रसंगों का अधिगम होगा।
  नीति-शास्त्रों एवं षोडश संस्कारों का विशद् ज्ञान अर्जित होगा।

इकाई १- ऋग्वेद एवं यजुर्वेद के चयनित मंत्र, **१६** संस्कारों का विस्तृत वर्णन।

इकाई २ - योग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय, वेदान्त, मीमांसा दर्शनों का सामान्य परिचय

इकाई ३ - श्रीमद्भगवद्गीता एवं उपनिषद् (ईश, केन, कठ, मुण्डक, माण्डूक्य, प्रश्न) के चयनित प्रसंग

इकाई ४ - नीति ग्रन्थों का परिचय (चाणक्यनीति, विदुरनीति, भर्तृहरि)

निर्धारित ग्रन्थ- भारतीय संस्कृति बोध, प्रो0 साध्वी देवप्रिया, दिव्यप्रकाशन

पूर्णाङ्कः–100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः–75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः–25
समयः–होरात्रयम्

प्रथमसत्रम्

पर्यावरणविज्ञानम्

Code- BVSAVA-107 (2) Credit-3

THE OBJECTIVES OF ENVIRONMENTAL SCIENCE ARE:

(a) Creating the awareness about Environmental Problems among the students.
(b) Imparting basic knowledge about the Environment and its allied problems and solutions.
(c) Developing an attitude of concern for the environment.
(d) Motivating public to participate in environment protection and environment improvement.
(e) Acquiring skills to help the concerned individuals in identifying and solving environmental problems.
(f) Striving to attain harmony with Nature.

COURSE SPECIFIC OUTCOMES

The course will empower the undergraduate students by helping them to:

- Gain in-depth knowledge on natural processes and resources that sustain life and govern economy.
- Understand the consequences of human actions on the web of life, global economy, and quality of human life.
- Develop critical thinking for shaping strategies (scientific, social, economic, administrative, and legal) for environmental protection, conservation of biodiversity, environmental equity, and sustainable development.
- Acquire values and attitudes towards understanding complex environmental economic- social challenges, and active participation in solving current environmental problems and preventing the future ones.
- Adopt sustainability as a practice in life, society, and industry.

Unit 1: Multidisciplinary nature of Environmental Science and Classification of Natural Resources (6 lectures)

Definition, scope and importance, Need for public awareness
Renewable and non-renewable resources:
Natural resources and associated problems
a) Forest resources: Use and over-exploitation, deforestation, case studies. Timber extraction, mining, dams and their effects on forest and tribal people
b) Water resources: Use and over-utilization of surface and ground water, floods, drought, conflicts over water, dams-benefits and problems
c) Mineral resources: Use and exploitation, environmental effects of extracting and using mineral resources, case studies
e) Energy resources: Growing energy needs, renewable and non-renewable energy sources, use of alternate energy sources. Case studies
f) Land resources: Land as a resource, land degradation, man induced landslides, soil erosion and desertification
• Role of an individual in conservation of natural resources
• Equitable use of resources for sustainable lifestyles

Unit 2: Ecosystemsand Functions: (8 lectures)

- Biosphere and its formation
• Concept of an ecosystem
• Structure and function of an ecosystem
• Producers, consumers and decomposers
• Energy flow in the ecosystem

• Ecological succession
• Food chains, food webs and ecological pyramids
• Introduction, types, characteristic features, structure and function of the following ecosystem :-
Forest ecosystem, Grassland ecosystem, Desert ecosystem, Aquatic ecosystems (ponds, streams, lakes, rivers, oceans, estuaries)

Unit 3: Biodiversity and Conservation (8 Lectures)
• Introduction – Definition: genetic, species and ecosystem diversity.
• Value of biodiversity: consumptive use, productive use, social, ethical, aesthetic and option values
• Biodiversity threats
• Hot-sports of biodiversity
• Threats to biodiversity: habitat loss, poaching of wildlife, man-wildlife conflicts.
• Endangered and endemic species of India
• Conservation of biodiversity: In-situ and Ex-situ conservation of biodiversity.

Unit 4: Environmental Pollution (6 lectures)
Definition
• Cause, effects and control measures of:-
a. Air pollution b. Water pollution
c. Soil pollution e. Noise pollution
g. Nuclear hazards
• Solid waste Management: Causes, effects and control measures of urban and Industrial wastes
• Role of an individual in prevention of pollution
• Disastermanagement: floods, earthquake, cyclone and landslides,
- Water conservation, rain water harvesting, watershed management
- Climate change, global warming, acid rain, ozone layer depletion. Case Studies.
- Environmental Acts and Policies (water, wildlife, biodiversity, air etc.)

Field Visits to Protected Areas, Visit to Research Organisation and Industries including Bird Watching Program/Biodiversity Observations
Recommended Books:

- Essential Environmental Studies by S P Misra & S. N Pandey (Anr Books Pvt. Ltd.)
- Environmental Studies by J P Sharma, Laxmi Publications,
- Paryavaran Addhayan (Hindi version) by Anubha Kaushik & C P Kaushik, New Age Publications
- Ecology & Environmental Biology by Ramdeo Misra, English Book Depot
- Environment and Ecology by R.Rajagopalan, OAK BRIDGE
- Ecology by Dr. Kailash Chaudhary & Dr. Ram Prakash Saran, IFAS Publications
- Fundamentals of Ecology by Eugene Pleasants Odum, CENGAGE Learning

प्रथमसत्रम्

प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम्- I

(Yoga Practical (Non Credit)

Code- BVSAVA-108

Objectives: Following the completion of the course, students shall be able to:

- Understand the benefits, contraindications and procedure of all practices.
- Demonstrate each practice with confidence and skill.
- Explain the procedure and subtle points involved.
- Teach the yoga practices to any given group.

Unit-1: Basic Preparatory Asanas

Sukshma yogic vyayam, Yogic jogging, Dand Baithak, Surya Namaskar

Unit-2: Asanas (20)

Sidhdasana, Mandukasana, Shashakasana, Vakrasana, Gomukhasana, Pashchimotanasana, Markatasana, Pawanamuktasana, Ardhahalasana, Padvrittasana, Dvichakrikasana, Uttanapadasana, Makarasana, Bhujangasana, Tadasana, Konasana, Padhastasana, Dhruvasana, Shirshasana, Shavasana.

Unit-3: Advance Yogasanas (10)

Sheershasan, Vrishchikasan, Bhunamanasan, Hanumanasan, Sarvangasan, Matsyasan, Halasan, Purna Dhanurasan, Purna Chakrasan, Purna Natarajasan, Mayurasan

Unit-4: Shatkarma (Shuddhi Kriya)

Jal Neti, Rubber Neti, Kapalbhati

Unit-5: Pranayam & Mudra

Kapalbhati & Nadi Shodhan Pranayam

Unit-6: Meditation

Pranav Meditation

Text Book: -

- Ramdev, S., (2022), Yoga Sadhna Evam Yoga Chikitsa Rahasya. Divya Prakashan.
- Balkrishna A., (Under Publication), Yoga Vishwakosh. Divya Prakashan
- Ramdev S., (2009), Pranayam Rahasya. Divya Prakashan.

Reference Book: -

1) Balkrishna A., (2017), Yoga Vijnanam: Yoga ke goorh rahasyo ka darshanik v vaijnanik vivechan (first edition). Divya Prakashan.
2) Balkrishna A., (2007), Vijnan ki Kasauti Par Yoga (first edition). Divya Prakashan.
3) Research Publication by Patanjali Research Foundation, Divya Prakashan.

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

द्वितीयसत्रम्

प्रथमपत्रम्- काशिकावृत्तिः (प्रथमाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ)

Code- BVSAMJ-201 Credit-4

उद्देश्य :

- इत्संज्ञा तथा आत्मनेपद एवं परस्मैपद विषयक बोध प्रदान कराना ।
- नदी, घि, पद और भ संज्ञाओं का बोध कराकर सम्पूर्ण अष्टाध्यायी में इन संज्ञाओं का क्रियान्वयन करना।
- कारक, निपात, उपसर्ग, गति और कर्मप्रवचनीय आदि संज्ञाओं का बोध कर उसमें प्रवीणता प्राप्त करना।

परिणामः

- आत्मनेपद व परस्मैपद का ज्ञान व प्रयोग करने में समर्थ होकर संस्कृत सम्भाषण में उन रूपों के प्रयोग में निपुणता प्राप्त कर लेता है।
- नदी व घि संज्ञा के प्रयोग देखकर शास्त्रों में शब्दों के यथार्थ स्वरूप को जानने में समर्थ हो जाते हैं।
- कारक प्रकरण के ज्ञान से संस्कृत संभाषण में प्रवीणता आती है।
- धातुओं का कण्ठस्थीकरण कर उनके प्रयोग से संस्कृत में सम्भाषण देकर भारतीयता का प्रचार कर समाज उन्नत बनाते हैं।
- भिन्न-भिन्न धातुओं का प्रयोग कर निबन्ध आदि लेखन में निपुणता आती है।

काशिकावृत्तिः (प्रथमाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ)

इकाई-1 भूवादयो धातवः (1.3.1)-शदेः शितः(1.3.60) **क्रेडिट-1**

धातुसंज्ञा, इत्संज्ञाप्रकरणम्, अनुदात्तादि आत्मनेपदप्रकरणम् ।

इकाई-2 म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च (1.3.61)-अन्तर्द्धौ येना..... (1.4.54) **क्रेडिट-1**

शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् प्रकरणम् , विप्रतिषेधः, नदीसंज्ञा, घिसंज्ञा, गुरुलघुसंज्ञे, कारक प्रकरणम्।

इकाई-3 आख्यातोपयोगे (1.4.29)-विरामोऽवसानम् (1.4.110) **क्रेडिट-1**

हेतुसंज्ञा, निपात्, गति, उपसर्ग, कर्मप्रवचनीय, तिङानां पुरुषनिर्धारणम्, संहिता, अवसान संज्ञाः ।।

इकाई-4 आख्यातिकः **क्रेडिट-1**

भ्वादिगणः - भू सत्तयाम्, एध वृद्धौ, सेवृ सेवन

अदादिर्गणः - अद, भक्षणे। हन, हिंसागत्योः। जागृ, निद्राक्षये। यु मिश्रणेऽमिश्रणे च। आङः शासु इच्छायाम्।

जुहोत्यादिर्गणः - हु दानादनयोः, आदाने चेत्येके। डुदाञ् दाने। ञिभी भये। ओहाक्, त्यागे।

दिवादिर्गणः - दिवु, क्रीडाविजी...। जृष वयोहानौ। शमु उपशमे। रञ्ज रागे।

स्वादिर्गण - षुञ् अभिषवे।

तुदादिर्गणः - तुद, व्यथने। मृङ् प्राणत्यागे। मुच्लृ, मोचने। कृ, विक्षेपे।

रुधादिर्गणः - रुधिर् आवरणे। तनु विस्तारे। डुकृञ् करणे।

क्रयादिर्गणः - डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये। ज्ञा अवबोधने।

चुरादिर्गणः - चुर स्तेये।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
  प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
  श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर,नई दिल्ली-49।
  ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।
- आख्यातिकः श्रीमत्स्वामीदयानन्दसरस्वती, प्रकाशक- वैदिक पुस्तकालय, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

पूर्णाङ्कः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25
समयः-होरात्रयम्

द्वितीयसत्रम्

द्वितीयपत्रम्- अष्टाध्यायीसूत्राणि (अध्यायः ५-८)

अदादितश्च कण्ड्वादिगणपर्यन्तम् (लेखनं स्मरणञ्च)

Code-BVSAMN-202 Credit-4

उद्देश्य :

- अष्टाध्यायी के मूलसूत्रों का लेखन व कण्ठस्थीकरण करना।
- पञ्चमाध्याय से लेकर अष्टमाध्याय पर्यन्त सम्पूर्ण सूत्रों का स्मरण।
- धातुपाठ में निर्दिष्ट अदादिगण से लेकर कण्ड्वादिगण पर्यन्त सम्पूर्ण धातुओं का कण्ठस्थीकरण और लेखन करना।

परिणामः

- मूल सूत्र कण्ठस्थीकरण से अध्येता अष्टाध्यायी के वृतिग्रन्थों के अध्ययन में कुशल हो जाता है।
- सूत्र स्मरण से छात्र अनुवृत्तियों के माध्यम से सूत्रार्थ करने में निपुण हो जाता है।
- मूल धातुकण्ठस्थीकरण से अध्येता धातुवृत्ति ग्रन्थों के अध्ययन में सक्षम हो जाता है।
- धातुपाठ स्मरण से छात्र धातुपाठ में निर्दिष्ट गण, आत्मनेपद, परस्मैपद, उभयपद, सेट्, अनिट्, आदि विषयों से अवगत हो जाता है।

इकाई-1 **क्रेडिट-1**

क. अष्टाध्यायी का पञ्चम अध्याय।

ख. धातुपाठ का अदादि, जुहोत्यादि, और दिवादिगण।

इकाई-2 **क्रेडिट-1**

(क) अष्टाध्यायी का षष्ठ अध्याय,

(ख) धातुपाठ का स्वादि और तुदादिगण

इकाई-3 **क्रेडिट-1**

(क) अष्टाध्यायी का सप्तम अध्याय

(ख) धातुपाठ का रुधादि, तनादि, और क्रयादिगण

इकाई-4 **क्रेडिट-1**

(क) अष्टाध्यायी का अष्टम अध्याय।

(ख) धातुपाठ का चुरादि और कण्ड्वादिगण।

पाठ्यपुस्तकम्-

1. अष्टाध्यायीसूत्रपाठः एवं धातृपाठ

प्रकाशक : दिव्य प्रकाशन पतंजलि योगपीठ

द्वितीयसत्रम्

तृतीयपत्रम्- संस्कृतसाहित्यम्-II

Code-BVSAMN-203 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- काव्यदीपिका द्वारा काव्य के भेद, ध्वनि भेद, रस भेद के बोध से काव्य गुणों का विकास करना।
- रघुवंशम् के माध्यम से भगवान् राम व उनके वंशजों के बोध पूर्ण जीवन मूल्यों का ज्ञान कराना।
- आयुर्वेद चरक संहिता के सदवत्त के माध्यम से सदगृहस्थ एवं विद्यार्थियों को करणीय अनुकरणीय विषयों का ज्ञान प्रदान कराना।

परिणामः

- काव्य के भिन्न-भिन्न भेदों को तथा रसादि को पहचानने में कुशल हो जाता है।
- ब्रह्मतत्व के महत्व को समझकर समाज में ब्रह्मतत्व के प्रति जागृति का प्रसार करता है।
- सद्वृत के माध्यम से करणीय अकरणीय विषयों का विवेक रखते हुए स्वयं के एवं अन्य के जीवन को स्वस्थ एवं उन्नत बनाकर योगी, उपयोगी व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

इकाई-1 काव्यशास्त्रम्-(काव्यदीपिका शिखा ३) क्रेडिट-1

काव्यध्वनिरसभेदाः ।

इकाई-2 गद्यम्- (राघुवंशम् - प्रथमसर्गः) क्रेडिट-1

(क) कविपरिचयः (ख) गद्यव्याख्या

(ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः

इकाई-3 उपनिषद् (केनोपनिषद्) क्रेडिट-1

इन्द्रियाणां प्रेरकः कः?, जीवात्मा परमात्मनः अंशः, अस्मिनेव जन्मनि ब्रह्मतत्वज्ञानस्यावश्यकता इत्यादयः ।

(क) कण्ठस्थीकरणम् (ख) विषयात्मकप्रश्नाः

इकाई-4 आयुर्वेदः- (चरकसंहिता सूत्रस्थानस्याष्टमोऽध्यायस्य स्वस्थवृत्तम्) क्रेडिट-1

सद्वृत्तस्य लाभः, सद्वृत्तवर्णनम् (कर्त्तव्यनिर्देशः),सद्वृत्त (करणीय), सद्वृत्त (अकरणीय) इत्यादयः ।

(क) गद्यव्याख्या (ख) विषयात्मकप्रश्नाः

पाठ्यपुस्तकम्-

1. काव्यदीपिका- विद्यारत्नकान्तिचन्द्रभट्टाचार्येण संगृहीता, प्रकाशकः-मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स।
2. राघुवंशम् - प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स।
3. एकादशोपानिषद् - डॉ. सत्यव्रतसिद्धान्तालंकार
4. चरकसंहिता- महर्षिचरकप्रतिसंस्कृता, प्रकाशकः- राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, जनकपुरी, नई दिल्ली।

द्वितीयसत्रम्

चतुर्थपत्रम्- भरतनाट्यम् (Basics of Bharatanatyam)

Code- BVSAID-204 (1) Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

Course Objectives

- To give basic knowledge of Bharatanatyam
- To help students understand Indian culture through dance
- To develop body coordination and expression
- To encourage appreciation of performing arts

Course Outcomes

After completing the course, students will be able to:

1. Identify Bharatanatyam as a classical Indian dance form
2. Perform basic steps and movements
3. Show simple expressions and hand gestures
4. Understand dance as art, culture, and communication

Course Syllabus

UNIT I – Introduction to Bharatanatyam (Theory – 15 hrs)

- Meaning of Bharatanatyam
- Origin and history (very basic)
- Bharatanatyam as a temple and stage art
- Costumes, ornaments, and makeup

UNIT II – Basic Dance Concepts (Theory – 15 hrs)

- Natya, Nritta, and Nritya (simple explanation)
- Rasa and Bhava (basic emotions)
- Hand gestures (few common hastas)
- Role of music and rhythm

UNIT III – Basic Steps & Movements (Practical – 15 hrs)

- Basic posture (Araimandi)
- Eye, neck, and hand movements
- Simple **Adavus** (Tatta& Natta only)
- Rhythm practice with counting

UNIT IV – Simple Expression & Dance (Practical – 15 hrs)

- Facial expressions for emotions
- Simple storytelling through gestures
- Short dance sequence
- Group practice or presentation

द्वितीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

चतुर्थपत्रम्- भारतीयदर्शनम् -I (योगसांख्यवेदान्तदर्शनम्)

Code- BVSAID-204 (2) Credit-4

उद्देश्य :-

- योगदर्शन के मूलभूत सिद्धांतों; चित्तवृत्ति निरोध, अष्टांगयोग एवं कैवल्यप्राप्ति के मार्ग का सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करना।
- सांख्य दर्शन के प्रकृति एवं पुरुष सिद्धांत, सृष्टि की उत्पत्ति, सत्कार्यवाद तथा त्रिविध दुःखों से मुक्ति के ज्ञानमार्ग आदि से अवगत कराना।
- वेदान्त दर्शन के अनुसार ब्रह्म को जगत का निमित्त एवं उपादान कारण तथा सर्वोपास्य स्वरूप आदि विचारों से अवगत कराना ।
- वेदान्त के अनुसार मुमुक्षु के लिए आवश्यक साधन, मोक्षमार्ग (देवयान) तथा मोक्ष की प्राप्ति आदि विषयों बोध कराना।

परिणाम :-

छात्र इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से,

- योगदर्शन में वर्णित चित्त के स्वरूप, अष्टांगयोग के क्रमिक अभ्यास द्वारा चित्तशुद्धि एवं समाधि द्वारा कैवल्यप्राप्ति के सिद्धांत की समझ एवं व्याख्या कर सकेंगे।
- प्रकृति-पुरुष के वास्तविक स्वरूप, उनके संयोग से उत्पन्न दुःख तथा विवेकज्ञान द्वारा मोक्षप्राप्ति के सांख्य सिद्धांत की समझ एवं व्याख्या कर सकेंगे।
- जगत की उत्पत्ति में ब्रह्म की कारणता, उसकी उपास्यता तथा वेदाध्ययन एवं ध्यान द्वारा हृदय में ब्रह्म की उपलब्धि के सिद्धांत को समझ कर व्याख्या कर सकेंगे।
- मोक्षप्राप्ति के लिए शम-दमादि साधन, सूक्ष्मशरीर की यात्रा तथा देवयान मार्ग से ब्रह्मलोक गमन एवं मुक्ति की अवस्था का वर्णन कर सकेंगे।

इकाई (१) योगदर्शन **(१८ होराः)**

महर्षि पतंजलि एवं योगदर्शन का सामान्य परिचय, योग शब्द का परिचय, चित्तभूमि, चित्तवृत्ति, अभ्यास एवं वैराग्य, सम्प्रज्ञात समाधि, ईश्वरप्रणिधान, अन्तराय, चित्तप्रसन्नता के साधन, अध्यात्म प्रसाद, अविद्या का स्वरूप, दृष्टा-दृश्य की परिभाषा, हेय, हेयहेतु हान एवं हानोपाय का ज्ञान, अष्टांगयोग एवं उनका फल, धारणा, ध्यान, समाधि और संयम का परिचय, इन्द्रियजय सिद्धि, पाँचसिद्धियां, तीन प्रकार के कर्म, आत्मभाव भावना, धर्ममेध समाधि, कैवल्य का स्वरूप।

इकाई (२) सांख्यदर्शन **(१८ होराः)**

त्रिविध दुःख, मुक्ति उपाय, बन्धान की अस्वभाविकता, पुरुष का स्वरूप, प्रकृति विकृति स्वरूप, जगत् का उपादान प्रकृति, प्रकृति पुरुष बाह्यार्थ प्रमाण दर्शन, पुरुष बहुत्व, विरक्त के मोक्षार्थ अविरक्त के भोगार्थ प्रकृति, पुरुषविशेष ईश्वर सृष्टि का कर्त्ता कारण शरीर के घटक, अन्तःकरण में बुद्धि की प्रधानता, स्थूल शरीर की पाँचभौतिकता, जीवन मुक्ति का वर्णन, अहिंसा आदि व्रतों का श्रेयःफल, वेदों का अपौरुषेयत्व, सत्कार्यवाद, समाधि सुषुप्ति मोक्ष में दुःख निवृत्ति के अनन्तर सुख की प्राप्ति, मुक्ति प्राप्ति के लिए श्रवण चतुष्टय साधन, अज्ञान के नाश से मोक्ष की प्राप्ति।

इकाई (३) वेदान्तदर्शन **(१२ होराः)**

जगत् की उत्पत्ति में ब्रह्म का निमित्तकारणत्व, ब्रह्म की उपास्यता, ध्यान के द्वारा ब्रह्म के हृदय में उपलब्ध होना, ब्रह्म के साक्षात्कार में मनुष्य मात्र का अधिकार, वेद का नित्यत्व, वेद के पढ़ने में मनुष्य मात्र का अधिकार, साकार ईश्वरवाद का खण्डन, जीवात्मा का नियत्व अल्पज्ञत्व अणुत्व, पुनः मनुष्यजन्मार्थ विराट् यात्रा, जीवात्मा की चार अवस्थायें, ब्रह्म ही एक सर्वोपास्य है, ब्रह्मवेत्ता विद्वानों का देवयान मार्ग से मोक्ष प्राप्त करना,

इकाई (४) वेदान्तदर्शन **(१२ होराः)**

चतुर्थाश्रम का उद्देश्य ब्रह्मप्राप्ति, मुमुक्षु के लिए शमदमादि साधन अनिवार्य, आश्रम कर्म एवं आश्रमान्तर सहाकारि कर्म का सेवन अनिवार्य है, ऊर्ध्वरेतः संन्यासी का पनः अवलहन न होना, मोक्ष प्राप्ति में अनेक जन्मों का प्रतिबन्ध नहीं है, प्रतीकों पासना का निषेध, ध्यान के द्वारा पुण्यपाप कर्मों से भोग की निवृत्ति, सूक्ष्म शरीर का मोक्ष पर्यन्त आत्मा के साथ रहना, हृदय से मूर्धा को प्राप्त हुई नाड़ी के माध्यम से ब्रह्मलोक गमन, दवयान मार्ग का स्वरूप, मुक्तात्मा की ब्रह्म के साथ आनन्द की अनुभूति।

निर्धारितग्रन्थाः

सन्दर्भग्रन्थाः 1. दर्शन प्रवेश - डा० साध्वी देवप्रिया, दिव्य प्रकाशन, हरिद्वार

प्रथमसत्रम्

चतुर्थपत्रम्-Communicative English-1

BVSAAE-205(1) Credit-2 Hours:-30

पूर्णाङ्काः-50
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-37
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-13
समयः-होराद्वयम्

Course Objectives:

- Develop proficiency in speaking, listening, reading, and writing in English for effective communication.
- Build confidence in students to use English in various social and professional contexts.
- Help students speak fluently and coherently in both formal and informal settings.
- Strengthen vocabulary, grammar, and pronunciation to enable students to express themselves accurately and appropriately.
- Develop active listening skills for better comprehension in conversations, lectures, and presentations.
- Improve students' ability to understand, analyze, and interpret written texts, enhancing critical thinking.

Unit 1: Fundamentals of English Grammar and Vocabulary Building	**6 Hours**
Topics	**Prescribed Texts**
• Sentence Formation • Parts of Speech • Articles • Modals • Direct and Indirect speech	English Grammar in Use by Raymond Murphy, 4th Edition, Cambridge
• Synonyms, Antonyms, Homophones and Homonyms	Word Power Made Easy by Norman Lewis

Unit-2: Reading and Listening Skills	**6 Hours**
Topics	**Prescribed Texts**
• Reading Comprehension (Skimming and Scanning) • Reading Academic Texts • Identifying the main idea of the text • Types of listening, Listening vs Hearing • Listening for details and main ideas • Note- taking skills	Short Story: Munshi Premchand, 'The Holy Panchayat'/'The Voice of God' Swami Vivekananda's Speech Of 1893, Chicago

Unit-3: Speaking Skills	**6 Hours**
Topics	**Prescribed Texts**
• Pronunciation (Stress, intonation, rhythm)	*Fundamentals of linguistics* by Raj Kumar Sharma, Atlantic Publishers, 2024.pp. 80-82
• Conversation and dialogue practice • Extempore • Public speaking and presentation skills • Debate and Group discussion	

Unit-4: Writing Skills	**6 Hours**
Topics	Prescribed Texts
• Sentence formation and paragraph writing • Structuring Essays • Writing formal and informal letters • Article writing • Email writing	*Language and Communication Skills*, Cambridge University Press, 2019

Suggested

Course Specific Outcomes

By the end of the course, students should be able to:

- Confidently engage in various conversations in English, demonstrating clarity and fluency.
- Effectively listen to and understand spoken English in different accents and contexts.
- Write clearly and correctly in English for various purposes such as emails, letters and essays.
- Understand and critically analyze different types of written texts (articles, essays, literature, etc.).
- Contribute thoughtfully in group discussions, presentations, and debates.
- Deliver effective oral presentations with confidence, clarity, and the appropriate use of language.

Method of Teaching & Assessment- Videos, Audio clippings, discussion, written and oral exercises

Readings:

- Adair, John. *Effective communication*. 4th Edition, Pan Mac Millan, 2009.
- Dawes, L. *The Essential Speaking and Listening*. Routledge, 2008.
- McCarthy, Micheal, Felicity O'Dell. *Basic Vocabulary in Use.* Cambridge. 2nd Edition, 2010.
- Singh, R.P. *An Anthology of English Essays*. Oxford, 2000.
- Seely, John. *The Oxford Guide to Writing and Speaking*. Oxford University Press, 1998.

Sharma, Raj Kumar, Bhushan Singh. A Comprehensive English Grammar. Atlantic Publishers, 2019.

द्वितीयसत्रम्

चतुर्थपत्रम्- Japanese

Code-BVSAAE-205(2) Credit-2

पूर्णाङ्काः-50
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-37
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-13
समयः-होराद्वयम्

Objectives for Learning Japanese Language

- To develop basic Proficiency in reading, writing, speaking and listening to Japanese.
- To get prepare for Japanese Language Proficiency Test (JLPT).
- To get a good job in Japan / Japanese company.

Unit – I

- Greetings
- Class instructions.
- Numbers(1-1000)
- Hiragana
- Kanji of Numbers (1-1000).
- Introduce basic sentences structure.
- Asking and answering questions.
- Explain the objects and their location and Possession.
- Visit shop and ask about price and purchase-something.
- Time
- Days name
- Verb forms and their uses in sentences.

Unit – II

- Numbers(1000-100000)
- Hiragana
- Colours Name
- Months Name
- How to use public Transport
- Asking and answering about Time and Date.
- Invite someone to do something
- Uses of Transitive verb.
- Family Members
- Vegetables Name
- Uses of different particles (が、お、で、へ .....)
- Uses of Adjectives

Unit – III

- Katakana.
- Describe about like & dislike.
- Explain about Degree / Ability/ Quantity.
- Existence or presence of a thing and person.
- Name of objective inside your house.
- Counter suffix and their uses.
- Comparison between items / People / Places.
- Explain the people /objects/ places.
- Basic Kanji .

COURSE OUTCOMES

By the end of the course, students should be able to :

• Confidently engage in various conversations in Japanese, demonstrating clarity and fluency.
• Effectively listen to and understand spoken Japa in different accents and contexts.
• Write clearly and correctly in Japanese for various purposes such as emails, letters and essays.
• Understand and critically analyze different types of written texts (articles, essays, literature, etc.).
• Contribute thoughtfully in group discussions, presentations, and debates.
• Deliver effective oral presentations with confidence, clarity, and the appropriate use of language.

Method of Teaching & Assessment- Videos, Audio clippings, discussion, written and oral exercise

TEXT BOOK

- Minna No Nihongo (N5)

REFRENCE BOOKS

- Tsumatome
- Shikanzen Master
- Genki

द्वितीयसत्रम्

षष्ठपत्रम्-योगचिकित्साविज्ञानम्-II

Code- BVSASE-206 (1) Credit-3

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धति के समन्वित स्वरूप का बोध कराना ।
- समन्वित चिकित्सा पद्धति के व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा साध्य एवं असाध्य रोगो का निदान।
- योग, आयुर्वेद, पञ्चकर्म, षट्कर्म, नेचुरोपैथी, आहार चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, एक्यूपंचर, एक्यूप्रेशर एवं फिजियो थैरेपी जैसे समन्वित भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धतियों के सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक बोध द्वारा योग्य एवं प्रशिक्षित व्यक्तित्व का निर्माण करना।

परिणाम :

- समन्वित चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षित विद्यार्थी समाज में साध्य-असाध्य रोगों से पीडित रोगियों को उपचार देकर उन्हें सम्पूर्ण आरोग्य का लाभ प्रदान करता है एवं भारतीय पुरातन चिकित्सा व्यवस्था के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है ।
- सेवा निष्ठ आजीविका का आलम्बन लेकर स्वयं आत्मनिर्भर होता हुआ अन्यों को भी रोजगार परख सेवा क्षेत्र में नियोजित करता है, उपकार परख उपचार की एक स्वस्थ परम्परा का संवाहक बनकर समाज को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के मार्ग पर अग्रसर करता है ।

इकाई 1-मिट्टी चिकित्सा, सूर्य चिकित्सा, जल चिकित्सा (हाइड्रोथैरेपी)

इकाई 2-मसाज के विविध प्रकार एवं प्रयोग

इकाई 3-प्राकृतिक चिकित्सा (नैचुरोपैथी)

इकाई 4-वैकल्पिक चिकित्सा एवं षट्कर्म

पाठ्यपुस्तकम्-

समग्र उपचार, प्रकाशन- द्विव्य प्रकाशन, द्विव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, हरिद्वार।

द्वितीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

षष्ठपत्रम्-Intermediate Knowledge of Music (Vocal & Instrumental)

Code- BVSASE-206 (2) Credit-3

UNIT- I Merits & Demerits of Vocalist, Margi /Desi Sangeet , Brief Definition about Raag, five important Rules of Raag , Jaati of Raag & Knowledge of 10 Thaat its Basic Speciality, Brief intro of Mel raag.

12 Hours

UNIT- II Biography of Musicians- Bhimsen Joshi, Pandit Vishnu Narayan Bhatkhande, Effect of Sound in our practical life, **Definitions:-** Gamaks-(Meed, kan,Khatka,Murki), Alankar no 5 to 10 (According to Bhatkhande Kramik pustak malika-1), AROH-AVROH-PAKAD-VADI-SAMVADI of Raag Yaman. Merits & Demerits of Musicians, Definition of following terms: Sum, Tali, Khali &Vibhag, Tuning of Tabla.

12 Hours

UNIT- III Practice of Previous Ten Alankar, Practice of Aroh , Avroh ,Pakad in Raag Yaman & Lakshan Geet, Practice of two Bhajan/Geet/ghazal Based on Raag (Yaman/Bhairavi/Darbari-kanhda)

12 Hours

UNIT- IV Tabla– Playing Skill of Basic Bol (NA, TI Teen, Dha Dhi, Dheen) One Kayda In Teentaal.

Harmonium- Playing Skills of One (Bhajan, Patriotic Song) **9 Hours**

Reference Book-

1. Sangeet Rachna Ratnakar Part -1 - Rajkishor Prasad Sinha(Author)
2. Raag Parichaya Part -1 to 4 – Harishchandra Srivastava(Author)
3. Sangeet Prasnottar Part-1
4. Taal Parichaya –All Parts - Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
5. Adarsh Tabla Prashnotari Part-1- Dr. Rubi Shrivastava
6. Sangeet Praveshika- Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
7. Kramik Pushtak Mallika Part –All Parts – V. N. bhatkhande
8. Bhartiya Sangeet Itihas – Umesh & Jaydev Joshi
9. Sangeet Vadya -Ragmani

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

द्वितीयसत्रम्

षष्ठपत्रम्- कृषिविज्ञानम्

Code- BVSASE-206 (3) Credit-3

Objective

To acquaint the students with the basic principles of farm management dealing with the analysis of farm resources having alternatives within the framework of resource restrictions.
Contents .

Outcomes

Student would be able understand the basic knowledge of agriculture and related tools as well as farming management in various perspectives as theory and practicals.

UNIT - I Introduction of Farm Management

Nature, scope, characteristics and role of farm business management; farm management decisions; farm management problems.

UNIT - II Law & Principles of Farm Management

Principles of farm management decisions – principle of variable proportion, cost principle, principle of factor substitution, law of equi-marginal returns, opportunity cost principle, etc.

UNIT - III Tools & Techniques of Farm Management

Tools of farm management and farm business analysis - farm planning and budgeting; Farm records and accounts, types and problems in farm records and accounts, net worth statement, farm efficiency measures.

UNIT - IV Resourcess of Farm Management

Management of farm resources – Land, Labour, Farm machinery, Farm building, etc.

UNIT - V Challenges of Farm Management

Risk and uncertainty in farming -sources of uncertainty in farming, management strategy to counteract uncertainty and decision making process in farm business management under risks and uncertainty.

Reference Books-

1. Heady EO & Jensen H. 1960. Farm Management Economics. Prentice Hall.
2. Johl SS & Kapoor TR. 1973. Fundamentals of Farm Business Management. Kalyani Publ.
3. Kahlon AS & Singh K. 1992. Economics of Farm Management in India. Allied Publ.
4. Panda SC. 2007. Farm Management & Agricultural Marketing. Kalyani Publ.

द्वितीयसत्रम्

सनातनसंस्कृतिबोध-II

Code- BVSAVA-207 (Credit-3)

पूर्णाङ्कः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य

- सामवेद एवं अथर्ववेद के चयनित प्रसिद्ध मंत्रों का वाचन एवं परिचयात्मक ज्ञान कराना।
- तैतिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक व श्वेताश्वतर के चयनित प्रसंगों से अवगत कराना।
- देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, प्रातः जागरण मंत्र, शयन मंत्रो को आत्मसाध कराना।
- वर्णाश्रम व्यवस्था, पञ्चमहाव्रत, पञ्चमहाभूत, पञ्चप्राण से अवगत कराना।

परिणाम

- उपर्युक्त चयनित मंत्रों को शुद्धतापूर्वक वाचन एवं व्याख्यान में कुशल होना।
- उपरोक्त उपनिषद् के प्रसिद्ध प्रसंगों का विस्तृत ज्ञान अर्जित होना।
- पञ्चमहायज्ञों को अपने जीवन में विनियोग करने में समर्थ होना।

इकाई 1- सामवेद एवं अर्थववेद के चयनित मंत्र।

इकाई 2- उपनिषद् (तैत्तरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक, श्वेताश्वतर) के चयनित प्रंसग।

इकाई 3- रामायण एवं महाभारत के चयनित प्रसंग एवं नवधा भक्ति का सामान्य परिचय। दैनिक दिनचर्या के विशेष मन्त्र, देवयज्ञ, जीवन दर्शन, पंचमहायज्ञ।

इकाई 4- महाभूत, पंचप्राण, वर्ण व्यवस्था, पंचकोश, पञ्च महाव्रत, अष्टाङ्गहृदय।

निर्धारित पाठ्यपुस्तकः-

1. भारतीय संस्कृति बोध, प्रो0 साध्वी देवप्रिया, दिव्यप्रकाशन

द्वितीयसत्रम्

प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम्- II

Code- BVSAVA-208

Objectives: Following the completion of the course, students shall be able to:

- Understand the benefits, contraindications and procedure of all practices.
- Demonstrate each practice with confidence and skill.
- Explain the procedure and subtle points involved.
- Teach the yoga practices to any given group.

Basic Preparatory Asanas as per previous semester

(Sukshma asana, Yogic jogging, Dand Baithak, Surya Namaskar)

Unit-1: Asanas (As per Hatha Pradipika) (15)

Swastikasana, Gomukhasana, Veerasana, Kurmasana,Kukkutasana, Uttanakurmasana, Dhanurasana, Matsyendrasana, Paschimottanasana, Mayurasana, Shavasana, Sidhhasana, Padmasana, Simhasana, Bhadrasana **& Previous semester asanas.**

Unit-2: Advance Yogasanas (8)

Adhomukha Tittibhasan, karna peedasan, Dimbasan, ChankraBandhasan, Kesarisutasan, Mahendrasan, Skandha pad Natarajasan, Dandayaman Janu shirasan, & Previous semester asanas

Unit-3: Shatkarma (Shuddhi Kriya)

Sutra Neti, Vaman Dhauti (Kunjal Kriya), Dand Dhauti & previous semester practices

Unit-4: Pranayam, Mudra & Bandh

Suryabhedan Pranayam, Ujjayi Pranayam, Bhastrika Pranayam, Bhramari Pranayam, Sheetali & Sitkari Pranayam & previous semester practices

Mahamudra, Mahabandh, Mahavedha, Uddiyan Bandh, Jalandhar Bandh, Moola bandh, Viparitkarni Mudra

Text Book: -

- Ramdev, S., (2022), Yoga Sadhna Evam Yoga Chikitsa Rahasya. Divya Prakashan.
- Balkrishna A., (Under Publication), Yoga Vishwakosh. Divya Prakashan
- Ramdev S., (2009), Pranayam Rahasya. Divya Prakashan.

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

तृतीयसत्रम्

प्रथमपत्रम्- काशिकावृत्तिः (द्वितीयोऽध्यायः)

Code- BVSAMJ-301 Credit-4

उद्देश्य :

- शास्त्र में पद विधि का बोध एवं सामान्य स्वर प्रकरण का ज्ञान कराना।
- अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि और द्वन्द्व समास का पूर्व पर निपात पूर्वक बोध इत्यादि ।
- कारक विभक्तियों एवं उपपद विभक्तियों का बोध ।
- समास में एकवद्-भाव एवं लिङ्ग-बोध ।
- आर्धधातुकविषयक धात्वादेशों का बोध ।
- तद्राजसंज्ञक प्रत्ययों, धातुओं एवं अव्ययों से विहित प्रत्ययों का लुक् इत्यादि ।

परिणामः

- सभी प्रकार के समास को पहचानने में समर्थ होते हैं तथा समस्त पदों का विग्रह करने में समर्थ होते हैं जिससे विद्यार्थी विविध शास्त्रों में उद्धृत संक्षिप्त व जटिल समस्त पदों को समझ पाते हैं।
- विभक्तियों के प्रयोग में तथा अन्य पुस्तकों में प्रदत्त उदाहरणों को देखकर उसका सूत्र बताने में समर्थ बनते हैं।
- समर्थ शब्द के साथ समर्थ विभक्ति का प्रयोग कर संस्कृत संभाषण में कुशल हो जाते हैं।
- परिभाषाओं के ज्ञापक का विश्लेषण करने में समर्थ होते हैं।
- परिभाषाओं को कण्ठस्थ कर सुनाने में तथा व्याकरण शास्त्र में प्रयोग करने में समर्थ होते हैं।

काशिकावृत्तिः (द्वितीयोऽध्यायः)

इकाई-1 समर्थः पदविधिः (2.1.1)-कुगति प्रादयः पर्यन्तम् (2.2.18) **क्रेडिट-1**

शास्त्रेय पदविधेयः बोधः, अव्ययीभावसमासः, तत्पुरुषसमासः ।

इकाई-2 उपपदमतिङ् (2.2.19)-चतुर्थी चाशिष्या.... पर्यन्तम् (2.3.73) **क्रेडिट-1**

बहुव्रीहिः द्वन्द्वसमासः, समासस्य पूर्वपरनिपातपूर्वकः,कारकविभक्त्योपपदविभक्त्योः बोध इत्यादि।

इकाई-3 द्विगुरेकवचनम्(2.4.1)-लुटः प्रथमस्य..... (2.4.85) **क्रेडिट-1**

समासे एकवद्भावः लिङ्गबोधश्च आर्धधातुकविषयकः धात्वव्ययैः विहितनां प्रत्ययानां लुक्इत्यादयः ।

इकाई-4 पारिभाषिकः-(1-80) **क्रेडिट-1**

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
  प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
  श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।
  ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।
- पारिभाषिकः-आचार्य प्रद्युम्न जी, प्रकाशक-ऋषि प्रिंटिंग प्रेस हरिद्वार ।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
  व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

तृतीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

द्वितीयपत्रम्- काशिकावृत्तिः (तृतीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ)

Code-BVSAMJ-302 Credit-5

उद्देश्य :

- सनन्त, नामधातु, यङन्त, णिजन्त एवं अयादि धातुओं का बोध कराके संस्कृत पठन-पाठन में समर्थ बनाना।
- आख्यात में प्रयुक्त होने वाले विकरण प्रत्यय तथा धातु से प्रयुक्त कृत् एवं कृत्य प्रत्ययों का बोध एवं प्रयोग सिखाना।
- कर्म एवं सुबन्त उपपद रहते धातुओं से प्रत्यय विधान तथा भूत एवं वर्तमान काल में निर्दिष्ट प्रत्ययों का बोध करा शब्द निर्माण प्रक्रिया से अवगत कराना।

परिणामः

- वैदिक वाङ्मय में प्रयुक्त सनन्त, यङन्त, णिजन्त तथा नामधातु आदि के माध्यम से ज्ञानार्जन करके समाज में शास्त्र सम्मत दृष्टि प्रदान करता है जिसके फलस्वरूप समाज में कर्तव्याकर्तव्य के बोध में निर्भ्रान्त दृष्टि मिलती है।
- तिङन्त में प्रयुक्त होने वाले विकरणों को बताने में समर्थ होते हैं तथा आख्यात को देखकर विकरण निर्धारण में भी समर्थ हो जाते हैं और कृत तथा कृत्य प्रत्यय निष्ठ शब्दों के प्रयोग से संस्कृत तथा संस्कृति के प्रति लोगों को आकृष्ट करते हैं जिससे समाज संस्कारवान् व सम्पन्न होता है।
- कृत्य व कृत् प्रत्ययों के ज्ञान से वाक्य निर्माण में पटुता आती है और उपपद धातुओं तिङन्त तथा लकारों के सम्यक् तथा सम्पूर्ण अर्थबोध से शास्त्र एवं साहित्य के माध्यम से लोगो के मध्य में जागरुकता तथा समरसता का पथ प्रशस्त करता है।
- सम्भाषण में कृत्य व कृत् प्रत्ययों का प्रयोग कर सम्भाषण को उत्कृष्ट बनाते हैं।

काशिकावृत्तिः (तृतीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ)-

इकाई-1 प्रत्ययः (3.1.1)- कुषिरजोः प्राचां श्यन्..... पर्यन्तम् (3.1.90) **क्रेडिट-2**

प्रत्ययः, परश्च, आद्युदात्तश्च इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 धातोः .....(3.1.91)- आशिषि च पर्यन्तम् (3.1.150) **क्रेडिट-1**

धातोः, तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्, कृदतिङ् इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 कर्मण्यण् (3.2.1)- आत्माने खश्च... पर्यन्तम् (3.2.83) **क्रेडिट-1**

कर्मण्यण् , ह्वावामश्च, आतोऽनुपसर्गे कः इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-4 भूते (3.2.84)-भूते, करणे यजः, कर्मणि हनः, मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च (3.2.188) **क्रेडिट-1**

ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्, इङ्धार्यो शत्रकृच्छ्रिणि इत्यादीनि सूत्राणि ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
  प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
  श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर,नई दिल्ली-49।
  ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

तृतीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

तृतीयपत्रम्- लिङ्गानुशासनोणादिकोषपारिभाषिकाः

(लेखनं स्मरणञ्च)

Code-BVSAMJ-303 Credit-4

उद्देश्य :

- लिङ्गानुशासनसूत्रपाठ का लेखन व कण्ठस्थीकरण करना।
- उणादिकोषसूत्रपाठ का लेखन व कण्ठस्थीकरण करना।
- मूलपरिभाषाओं का लेखन व कण्ठस्थीकरण करना।

परिणामः

- मूल लिङ्गानुशासनम् ग्रन्थ के कण्ठस्थीकरण से अध्येता लिङ्गानुशासनवृत्ति ग्रन्थों के अध्ययन में सक्षम हो जाता है।
- मूल उणादिकोष कण्ठस्थीकरण से अध्येता उणादिकोषवृत्ति ग्रन्थों के अध्ययन में सक्षम हो जाता है।
- परिभाषाओं के ज्ञापक, वाचनिक, न्यायमूलादि पक्षों के ज्ञान से व्याकरण शास्त्र के गूढविषयों को सहजता से आत्मसात् कर लेते हैं।

लिङ्गानुशासनोणादिकोषपारिभाषिकाः (लेखनं स्मरणञ्च)

- **इकाई-1** लिङ्गम्, स्त्री, (1-34) पुमान् (35-117) नपुंसकम् (112-171) स्त्रीपुंसयोः (172-176) पुंनपुंसकयोः (177-183) अविशिष्टलिङ्गम् (184-190) **क्रेडिट-1**
- **इकाई-2** कृवापाजि0 (उणादि0 पा0 1) - कृहृभ्यामेणुः (उणा0 पा. 2) **क्रेडिट-1**
- **इकाई-3** छित्वरछत्वर0 (उणा.पा. 3) - वातप्रमीः (उणा0 पा. 4) **क्रेडिट-1**
- **इकाई-4** अदिभुवो डुतच् (उणा.पा.5) - परिभाषापाठ (व्याख्यानतो0 1-158) **क्रेडिट-1**

पाठ्यपुस्तकम्-

- परिभाषापाठः
  प्रकाशक : - दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ।

पूर्णाङ्कः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25
समयः-होरात्रयम्

तृतीयसत्रम्

चतुर्थपत्रम्- संस्कृतिसाहित्यम्-III

Code- BVSAMN-304 Credit-4

उद्देश्य :

- काव्यगत भेदों एवं दोषों का सम्यक् बोध कराना।
- विविध छन्दों का उदाहरणपूर्वक बोध कराना।
- आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता, दण्डनीति, इन्द्रिय जय (अरिषड्वर्ग) तथा राजर्षि व्यवहार का ज्ञान कराना।

परिणामः

- काव्य की आलोचनात्मक विवेचना एवं काव्य निर्माण के समय दोषों से बच सकता है।
- छन्दों के ज्ञान से विभिन्न छन्दों में श्लोक निर्माण करने में समर्थ हो जाता है।
- आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता दण्डनीति इत्यादि के सम्यक् बोध से तर्क विज्ञान, वेदविज्ञान, व्यापार विज्ञान एवं राजनीति ज्ञान से युक्त होकर मानव मूल्यों से युक्त समाज का निर्माण करता है।

इकाई-1 काव्यशास्त्रम् - (काव्यदीपिका शिखा 4, 5) **क्रेडिट-1**

इकाई-2 गद्यम्- अर्थशास्त्रान्तर्गतं विनयाधिकरणम् **क्रेडिट-1**

(क) गद्यसाहित्योद्भवपरिचयौ/ गद्यकृत्परिचयः

(ख) शब्दार्थः, शब्दालंकारः वाक्यान्वयः, अर्थालंकार/ व्यसनविषयकप्रश्नाः

इकाई-3 नाटकम्- शिशुपालवधः **क्रेडिट-1**

(क) श्लोक व्याख्या/ गद्य व्याख्या

(ख) पात्रपरिचयः/ कविपरिचयः

(ग) चरित्रचित्रणम्/ अंकसारः

इकाई-4 छन्दांसि- **क्रेडिट-1**

अनुष्टुप, आर्या, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वंशस्थ, मालिनी, शालिनी, शार्दुलविक्रीडित, पंचचामर, शिखरिणी, भुजंगप्रयात।

सहायकग्रन्थाः-

- **काव्यदीपिका**- विद्यारत्नकान्तिचन्द्रभट्टाचार्येण संगृहीता, प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि. देहली ।
- **कौटलीय अर्थशास्त्र**-उदयवीर शास्त्री (व्याख्याकार)
  मेहरचन्द्र लक्ष्मणदास पब्लिकेशन नई दिल्ली
- **शिशुपालवधः**-मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि. देहली।
- **वृत्तरत्नाकर**-चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।

तृतीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः-50
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-37
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-13
समयः-होराद्वयम्

पंचमपत्रम् - Introduction to Journalism & Mass Communication

Code- BVSAID-305 (1) Credit-2

Objectives

Course Objectives

- To introduce students to the concepts, processes, and importance of journalism and mass communication.
- To explore the historical evolution and functions of media in society.
- To familiarize students with communication models and theories.
- To develop an understanding of media ethics and laws.
- To provide practical insights into basic content creation for media platforms.

Course Outcomes (COs)

By the end of this course, students will be able to:

- CO1: Describe the basic concepts and processes of communication.
- CO2: Identify the historical development and role of journalism in society.
- CO3: Analyse various models and theories of communication.
- CO4: Examine the ethical and legal frameworks of media practices.
- CO5: Demonstrate basic skills in content creation and media platform usage.

Unit	Course Outline	CO Mapping	Bloom's Taxonomy Level
1	**Basics of Communication (6 Hours)** : Definition, Elements, and Process of Communication; Ancient Indian concept of communication –oral tradition, use of cave art, bhoja-patras, rock edicts and pillars for communication, samvad, story-telling, folk, drama, art of communication in Natyashastra, sadharanikaran. Types of Communication: Intrapersonal, Interpersonal, Group, Mass Communication; Functions of Communication: Informing, Persuading, Entertaining; Barriers to Communication	**CO1,CO3**	**K1, K4**
2	**Introduction to Journalism (6 Hours):** Definition, Scope, and Importance of Journalism; Historical Overview of Journalism in India; Principles of Journalism: Accuracy, Objectivity, Fairness; Role of Journalism in Democracy	**CO2**	**K2**
3	**Mass Communication (6 Hours):** Definition and Characteristics of Mass Media; Types of Mass Media: Print, Broadcast, Digital; Media Convergence and New Media Technologies; Social, Cultural, and Political Impact of Media	**CO2,CO3**	**K2, K4**
4	**Media Ethics and Laws (6 Hours):** Introduction to Media Laws: Defamation, Copyright, Contempt of Court; Ethical Challenges in Journalism and Media; Freedom of Press in India; Media Literacy and Responsible Journalism	**CO4**	**K3, K5**

5	**Hands-on Learning Insights (6 Hours):** Basics of News Writing: 5Ws and 1H; Crafting Headlines and Leads; Introduction to Digital Media Platforms: Blogging, Podcasting, Social Media; Group Discussions on Emerging Media Trends	**CO5**	**K3, K6**
Bloom's Taxonomy Level: K1-Remember, K2- Understand, K3- Applying, K4- Analyze, K5- Evaluate, K6-Create			

Assignments:

Assignment 1: Write a report on the role of journalism in democracy, with examples from Indian and global media practices. (500 words)

Assignment 2: Create a blog post on an emerging trend in digital media, such as podcasting or citizen journalism. (500 words)

Suggestive Readings:

- Baran, S. J. (2020). Introduction to Mass Communication: Media Literacy and Culture (10th ed.). McGraw-Hill Education.
- Dominick, J. R. (2012). The Dynamics of Mass Communication: Media in the Digital Age (12th ed.). McGraw-Hill.
- Kumar, K. J. (2020). Mass Communication in India (5th ed.). Jaico Publishing House.
- McQuail, D. (2010). McQuail's Mass Communication Theory (6th ed.). Sage Publications.
- Natarajan, J. (1955). History of Indian Journalism. Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, India.
- Ravindran, R. K. (1999). Handbook of Radio, Television, and Broadcast Journalism. Anmol Publications.
- पांडे, स. के. (2018). जनसंचार और पत्रकारिता का परिचय. वाराणसी: भारतीय विद्या भवन पब्लिकेशन।
- गुप्ता, एस. (2020). जनसंचार माध्यम और सिद्धांत. दिल्ली: समीर प्रकाशन।
- शर्मा, विकास. (2019). पत्रकारिता के सिद्धांत और व्यवहार. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- त्रिपाठी, राकेश कुमार. (2016). समाचार लेखन और संपादन. दिल्ली: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- प्रसाद, महेंद्र (2015). भारतीय पत्रकारिता का इतिहास. पटना: प्राची प्रकाशन।
- मिश्रा, उमेश. (2021). जनसंचार माध्यमों की भूमिका. भोपाल: साहित्य प्रकाशन।
- द्विवेदी, रामेश्वर. (2017). पत्रकारिता और लोकतंत्र. लखनऊ: लोकोदय प्रकाशन।

पूर्णाङ्काः-50
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-37
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-13
समयः-होराद्वयम्

तृतीयसत्रम्

पंचमपत्रम्-भारतीयदर्शनम् -II (न्यायमीमांसावैशेषिकदर्शनम्)

Code:BVSAID-305 (2) Credit-2

उद्देश्य (Objective):

- विद्यार्थियों को न्यायदर्शन की प्रमाण-मीमांसा और तर्कशास्त्र के आधारभूत विचारों से परिचित कराना।
- आत्मा की नित्यता, मन की सूक्ष्मता और तत्त्वज्ञान के व्यावहारिक पक्ष को स्पष्ट करना।
- सृष्टि के मूल तत्वों (द्रव्य, गुण, कर्म) और परमाणुवाद के सिद्धांत का गहन विश्लेषण करने के साथ प्रत्यक्ष, अनुमान जैसे ज्ञान एवं उनके साधनों की परीक्षा करना।
- धर्म की जिज्ञासा से लेकर वेदों की अपौरुषेयता और शब्द की नित्यता तक के सिद्धांतों का प्रतिपादन करना। मीमांसा के विभिन्न अधिकरणों के माध्यम से वैदिक वाक्यों की प्रामाणिकता को सिद्ध करना।

परिणाम (Outcome):

- विषयों के तार्किक विश्लेषण, प्रमाणों के वर्गीकरण और शास्त्रार्थ की पद्धति को समझने में सक्षम होंगे।
- देह और आत्मा के अंतर को दार्शनिक दृष्टिकोण से समझ पाएंगे।
- सृष्टि की संरचना के भौतिक और वैचारिक आधार को समझ सकेंगे।
- धर्म के वास्तविक लक्षण और वेदों की महत्ता को तार्किक रूप से समझ के साथ भारतीय परंपरा में 'धर्म' के प्रमाणिक स्वरूप की व्याख्या करने में निपुण होंगे।

इकाई (१) न्यायदर्शन १ **(७ होराः)**

16 पदार्थों का उद्देश्य, प्रमाण भेद, इन्द्रियों का भौतिकत्व, दुःख का लक्षण, अपवर्ग का लक्षण, सिद्धान्त के प्रकार, पञ्चावय विभाग, वाद, जल्प, वितण्डा का स्वरूप निरूपण, हेत्वाभास विभाग, छल, जाति, निगहस्थान परिचय, तत्त्वज्ञान परिपालनार्थ जल्प वितण्डा की अपेक्षा, संशय का परिचय।

इकाई (२) न्यायदर्शन २ **(७ होराः)**

देहादि व्यतिरिक्त आत्मा, आत्मा का नित्यत्व, इन्द्रियनानात्व, शरीर की पाँचभौतिकता कर्मफल व्यवस्था, बुद्धि की अनित्यता, स्मृति के निमित्त, मन के अणुत्व का निरूपण, शरीरोत्पत्ति में अदृष्ट की कारणता, दोष परीक्षण, तत्त्वज्ञान विषय निरूपण, तत्त्वज्ञान फल निरूपण, अपवर्ग की प्राप्ति के लिए यम-नियमादि का अनुष्ठान।

इकाई (३)वैशेषिकदर्शन **(८ होराः)**

धर्म लक्षण, द्रव्य-गुण-कर्म का लक्षण एवं विभाग, पंचमहाभूतों की परीक्षा, काल एवं दिक् की परीक्षा, शब्द नित्यत्व प्रकरण, हेतु एवं हेत्वाभास लक्षण, मन एवं आत्मा की परीक्षा, परमाणुकारणातावाद, कार्यकारण सिद्धान्त, प्रत्यक्षज्ञानपरीक्षा, अनुमानज्ञानपरीक्षा, अभावपरीक्षा, सुख एवं दुख की परीक्षा।

इकाई (४)मीमांसा दर्शन **(८ होराः)**

धर्मजिज्ञासाधिकरणम्, धर्मलक्षणाधिकरणम्, धर्मे प्रामाण्यपरीक्षाधिकरणम्, धर्मस्य प्रत्यक्षाद्यगम्यत्वाधिकरणम्, धर्मे चोदनाप्रामाण्याधिकरणम्, शब्दनित्यत्वाधिकरणम्, पदार्थमूलतया वाक्यार्थप्रामाण्याधिकारणम्, वेदाऽपौरुषेयत्वाधिकरणम्

निर्धारितग्रन्थाः

1. भारतीयदर्शनम् – II, दिव्यप्रकाशन, हरिद्वार

सन्दर्भग्रन्थाः

1. दर्शन प्रवेश, डा० साध्वी देवप्रिया, दिव्यप्रकाशन, हरिद्वार
   भारतीय दर्शनों का इतिहास एवं मीमांसा डा० साध्वी देवप्रिया, दिव्यप्रकाशन, हरिद्वार

तृतीयसत्रम्

षष्ठपत्रम् - Advance Communicative English

Code- BVSAAE-306 (1) Credit-2

पूर्णाङ्काः-50
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-37
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-13
समयः-होराद्वयम्

Course Objectives:

- To develop advanced speaking, listening, reading, and writing skills in English.
- To enhance the ability to communicate effectively in professional, academic, and social settings.
- To improve pronunciation, fluency, and vocabulary.
- To provide exposure to various forms of written communication, including reports, essays, and research papers.

Unit 1: Vocabulary Expansion	**6 Hours**
Topics	Prescribed Text
• Using phrasal verbs, idioms, and collocations appropriately. • Learning words in context (academic, professional, and social contexts).	*Advanced English Vocabulary in Use* by Micheal McCarthy and Felicity O'Dell. Cambridge

Unit-2: Reading Comprehension and Analysis	**8 Hours**
Topics	Prescribed Texts
• Strategies for reading academic texts, articles, and books. • Analysing arguments, structure, and evidence in texts.	The Efficient Reading Skills by Iyabode Omolara Akewo Daniel in *Communication and Language Skills*. Cambridge University Press.
Critical Analysis of a literary text	*The Mahabharata*: A Shortened Modern Prose Version of the Indian Epic by R.K. Narayan

Unit-3: Advanced Speaking Skills	**8 Hours**
Topics	Prescribed Texts
Public Speaking • Preparing speeches and presentation • Techniques for effective public speaking (Body language, eye contact and voice modulation) **Debates and Group Discussions** • Strategies for formal debates • Critical Thinking and Analytical Skills • Leadership and Teamwork in Discussions **Interview Skills** • Different types of interviews • Identifying your strengths, weaknesses, skills, and achievements • Prepare answers to typical interview questions. • Understanding body language and other non-verbal cues.	*Communication Skills* by Leena Sen, 2nd Edition, PHI Learning.

Unit 4: Academic and Professional Writing	8 Hours
Topics	**Prescribed Texts**
Essay Writing • Structure of Academic Essays • Developing arguments **Academic Writing** • Conventions of Academic Writing • Summarizing and Paraphrasing **Business Writing** • Writing formal emails, memos, and reports. • Creating professional documents (e.g., CVs, cover letters). • Writing persuasive proposals and business letters.	Academic Writing and Composition" by Sharmila Majumdar in Introduction to Undergraduate English, Book 2 by Parthapratim Bandyopadhyay et al. Cambridge University Press, 2018. pp.105-137. *Communication Skills* by Leena Sen, 2nd Edition, PHI Learning.

Course Specific Outcomes

By the end of the course, students should be able to:

- Ability to speak English confidently and fluidly in diverse social, academic, and professional contexts.
- Advanced skills in reading and understanding complex texts, including academic articles, reports, and literary works.
- Ability to deliver clear, confident, and structured presentations in both professional and academic environments.
- Ability to perform well in interviews, networking events, and other job-related communication tasks.

Method of Teaching & Assessment- Videos, Audio clippings, discussion, written and oral exercises

Suggested Readings:

- Adair, John. *Effective communication*. 4th Edition, Pan Mac Millan, 2009.
- Dawes, L. *The Essential Speaking and Listening*. Routledge, 2008.
- Lewis, Norman. *Word Power Made Easy.*
- Singh, R.P. *An Anthology of English Essays*. Oxford, 2000.
- Seely, John. *The Oxford Guide to Writing and Speaking*. Oxford University Press, 1998.

तृतीयसत्रम्

षष्ठपत्रम् - French

Code- BVSAAE-306 (2) Credit-2

पूर्णाङ्काः–50
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः–37
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः–13
समयः–होराद्वयम्

Objectives for Learning french Language

- To develop basic Proficiency in reading, writing, speaking and listening to French language..
- To get prepare for DELF.
- To get a good job in France/ French company.
- To spread the Indiana culture in France and all the french speaking country.

Theory : 3 Period per week	
Unit-1	Alphabets Vowel and consonants, Genders, Numbers Article (indefinite) Pronunciation: orthographic rules concerning written account marks. Sentence structure, punctuation rules. Noun ; (Singular and plural) Pronouns Article : (definite) Adjective : (colours and shapes) Preposition
Unit-2	Les personnes :(the persons) Les choses : (the things) Les matières : (the materials) Basics verbs : (être, avoir, aller, faire) Ordinal numbers Possessive adjectives Le corps : (The body)
Unit-3	Verb : 1st group (present indefinite) Articlescontracté L'heure (the time)
Unit-4	Verbs 2nd group Les jours – the days Les mois – the months L'année – the year Les saisons – the seasons Demonstrative adjectives Les measures – the measurement La maison – the house La famille- the family
Unit-5	Verbs 3rd group Tense passé composé (past tense) Partitive articles Les repas – the meals Tense Futur simple (future tense)

तृतीयसत्रम्

सस्वरः वेदपाठः

Code-BVSASE-307 (1) Credit-3

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- वेदों की रक्षा करना।
- वेद, वेदो का विषय और वेदों के ऋषियों से लाभान्वित् होगें।
- वेद पाठ के हर प्रकार के पाठों से अवगत कराना।
- अक्षरों (वर्णो) उच्चारण का सम्यक बोध कराना।

परिणाम-

- वेद पाठ के प्रकारों (पाठों) का बोध होगा।
- अग्नि,वायु, सस्वर, पाठ एवं अर्थ बोध।
- वैदिक वाङ्मय के विषय मे ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- एकाग्रता बढ़ती है, सात्विक हारमोन्स पैदा होने से अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञान का एवं आनन्दमय अस्तित्व पुष्ट एवं प्रसन्न होता है।

ईकाई-१

१. वैदिक वाङ्मय परिचय
२. वेदो के ऋषियों, छन्द एवं देवताओं के स्वरूप का परिचय।
३. वेदों के मुख्य विषयों का परिचय।
४. वेद पाठ के आठ प्रकार के पाठों (जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वजा, दण्ड, रथ, घन)से अवगत कराना।
५. मुख्य सूक्तों का परिचय (अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी, बृहस्पति, स्वस्तिवाचन, पुरुषसूक्त, नासदीयसूक्त, शान्तिकरण, श्रद्धा, संगठन एवं दिनचर्या मन्त्रों का सस्वर उच्चारण)

ईकाई-२

१. ऋग्वेदीय अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।
२. पुराने पाठ की आवृत्ति।

ईकाई-३

१. पुरुष सूक्त नासदीय सूक्त, बृहस्पति सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।
२. पुराने पाठ की आवृत्ति।

ईकाई-४

१. कृष्ण युजर्वेदीय तैत्तीरीय आरण्यक मंत्रपुष्पम् का परिचय।
२. पुराने पाठ की आवृत्ति।
३. मन्त्रपुष्पम् का पाठ एवं कण्ठस्थ अर्थ सहित व्याख्या।
४. स्वस्तिवाचन शांतिकरण एवं दिनचर्यामंत्रो का सस्वर उच्चारण।
५. संगठन सूक्त के प्रतिदिन एक-एक मंत्र का अर्थ बोध।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक-वैदिक सूक्त मञ्जरी, मुद्रक-ऋषि ऑफसैट प्रिन्टर्स, ज्वालापुर हरिद्वार।

तृतीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः–100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः–75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः–25
समयः–होरात्रयम्

Advance Knowledge of Music
(Vocal & Instrumental)
Code: BVSASE-307 (2) Credit-3

Objective-

- Understand the fundamental concepts of music, including its origins, methods, types, and forms
- Explore the nature of sound, its origin, and the elements of music such as notes, pitches, and rhythm.Learn about concepts like Shruti, Swar, Andolan, Laya, and Taal, including their types and characteristics.Gain knowledge of basic musical notes, scales, and octaves.Practice to Sing five Bhajans.
- Understand the concept of Raag, its rules, classifications, and basic characteristics.Identify the ten Thaats and learn about their significance in Raag classification.Recognize three Raags belonging to each of the ten Thaats.
- Study the lives and contributions of prominent musicians.

Unit I- Basic Theory of Primary Raag (Yaman and Bhairav), Writing Skills of Chota khayal in Teentaal in Raag Yaman, Importance of Taal in Music, Labeled Diagram of Tabla, Biography & Role in Tabla – Pt.Kishan Maharaj, Labeled Diagram of Tanpura, its role & Significance in music. **(15 Hours)**

Unit II- Writing skill of one kaydas & One paltas each in Thah Laya in teentaal, Two Yog Geet . **(10 Hours)**

Unit III- Practice of one Chota Khayal (Bandish) in Teentaal madhya laya with two Taan, Stage /Class Performance of One(Bhajan,Patriotic Song & Ghajal). **(10 Hours)**

Unit IV- **Tabla**:- Bhajan Playing pattern on Tabla, One Palta in Teentaal. Ability to play Teentaal on Lehra . **(10 Hours)**

Harmonium : Playing Skill of **Aroh Avroh Pakad** in Following Raag (Bhopali, Malkaush,Bhairavi), Practice of One (bhajan, Motivational Song), playing skill of Alankar 1 to 10 (According to kramik pustak malika-1)

Outcomes-

4. Students will know what music is, where it comes from, and the different types it can have.
5. Students will understand how sound works and learn about notes, pitches, and how they change in music.They will learn about concepts like Shruti, Swar, Andolan, Laya, and Taal, including their types and characteristics.Students will acquire knowledge of basic musical notes, scales, and octaves, and practice singing five Bhajans.
6. Students will learn about Raag, its rules, and different types, helping them appreciate Indian classical music better.
7. Students will discover the lives of famous musician and understand their importance in music history.

Recommended Books:-

1. Sangeet Rachna Ratnakar Part – 1- Rajkishor Prasad Sinha (Author)
2. Raag parichaya Part – 1 to 4 – Harishchandra Srivastava (Author)
3. Sangeet Prasnottar Part – 1
4. Taal Parichaya – All parts – Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
5. Adarsh Table Prashnotari Part – 1 – Dr. Rubi Shrivastava
6. Sangeet Praveshika – Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
7. Kramik Pushtak Mallika Part – All Parts – V.N. Bhatkhande
8. Bhartiya Sangeet Itihas – Umesh & Jaydev Joshi
9. Sangeet Vadya – Ragmani

तृतीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

Computer Applicatins
Code- BVSASE-307 (3) Credit-3

Course Objectives:

After the completion of the course, students shall be able to:

1) Understand the basic mechanism and functionality of computer
2) To use computer efficiently for their educational & other purposes & needs

Total no. of hours : 30	Theory	Tutorial	Pracical
Hrs/Week	3	0	0
Scheme of Examination			
Total Marks : 50			
Theory : 50		Practical: 0	
Final Exam	Internal Assessment	Final Exam	Internal Assessment
		35	15

UNIT -I: Computer Fundamentals **15 Hours**

Block Diagram of a Computer Functions of the Different Units (Input unit, Output unit, CPU (ALU+CU)) , Input & Output Devices , Memories, Memory hierarchy, Registers and Types, Cache Memory , Primary Memory (RAM, DRAM and SRAM, ROM. Software, System Software and Application Software , Computer Languages: Machine language, Assembly language, High level language, Compiler, Assembler Interpreter.

UNIT -II: Number Systems and Boolean Algebra **8 Hours**

Bit, Byte, Nibble, Word, Binary Number, Binary Arithmetic (Addition, Subtraction, Multiplication, Division), Hexadecimal number system, Octal number system, Conversion between number systems,

UNIT III- MS Word, MS Power Point, MS Excel **18 Hours**

MS-Word: Creating a new document, Ribbon and Tabs, Font formatting (Size, style, color), Paragraph formatting(Alignment, indentation spacing), Bullets, page setup(margins, orientation, size), Headers and Footers, page numbering, creating and formatting tables, inserting and deleting rows and columns, Merging and splitting cells, sorting and filtering data in tables, adding images and shapes, mail merge,

MS- Power Point: Creating New Presentations, Saving Presentations, Adding Text to Slides, Working with Slide Layouts, Creating and Modifying Bullet Lists, Adding Background Colors, Using Gradients, Adding Images to Backgrounds, Applying Backgrounds to All Slides, Creating a Presentation ,Choosing a Template/Theme, Changing the Template/Theme ,Adding Slides & Typing in Content, Choosing a Slide Layout ,Changing the Slide Layout, Placing Pictures into Placeholders, Adding Shapes, Styling Shapes, Text Boxes, Creating Tables in PowerPoint ,Typing in Table Data ,Designing Tables

UNIT IV: MS- Excel:

A brief description of the user interface for Microsoft Excel ,Manage elements of worksheets , Cells, Columns, Rows, Cell address, Examines and describes multiple means of entering data, Insert, delete, hide, and group rows and columns, functions: Sum, Average, Max, Min, If, Countif, Sumif, and Count Numbers, Changing a cell reference into a constant, which is necessary for certain calculations, Column Chart, Line Chart, Pie Chart, Freeze Panes

Text Books:

1. Rajaraman, Neeharika Adabala, Fundamentals of Computers 6th Edition , Prentice Hall India Learning Private Limited, 2014.
2. Morris. M. Mano, Digital Logic and Computer design, 3rd Edition, Prentice Hall India

Reference Books:

1. Malvino& Leach, Digital Computer and Applications, 4th Edition, Tata Mc-Graw Hill Company, 2015.
2. Reema Thareja, Fundamentals Of Computers 2nd Edition, Oxford University Press, 2026.

Course Outcomes:

Upon successful completion of this course, students will be able to:

1. Understand the fundamental concepts of computer architecture, memory hierarchy, and input/output devices.
2. Explain the role of system and application software and various programming languages.
3. Perform number system conversions and basic binary arithmetic operations.
4. Create word documents , Presentations and worksheets

तृतीयसत्रम्

काव्यरचनाकौशलम्

Code- BVSASE-307 (4) Credit-3

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

1. विद्यार्थियों में काव्य रचना की योग्यता विकसित करना।
2. अन्य पाठ्यक्रम के साथ साथ काव्यरचना की सूक्ष्म कला को सीखना ।
3. विविध शास्त्रों को सुगमता से जानना

परिणाम-

1. इससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास पैदा होगा।
2. विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता बढ़ेगी।
3. इससे विद्यार्थी अन्य विषयों के अतिरिक्त ऐसी क्षमता प्राप्त कर सकेंगे जिससे उनमें नवीन रचना करने की योग्यता विकसित हो सकेगी।
4. विद्यार्थी काव्यरचना करके धनोपार्जन करने में समर्थ होता है।

इकाई-१ (क) दण्डी-वामन-रुद्रट-आनन्दवर्धन- राजशेखर-कुन्तक-क्षेमेन्द्र-मम्मट-विश्वनाथ-पण्डितराज जगन्नाथ-प्रभृतीनाम् आचार्याणां मतेन
काव्यप्रयोजन-काव्यहेतु-काव्यलक्षणानां सभेदोदाहरणं समीक्षात्मकम् अध्ययनम्।
(ख) ध्वन्यालोकः प्रथम उद्योतः
(ग) सद्योऽनुवादः - अभ्यासः, परीक्षणञ्च

इकाई-२ (क) अमरकोशः स्वर्ग-देव, ब्रह्म, अग्नि, यम, राक्षस, वायु, शीघ्र, विष्णु, मदन, लक्ष्मी, शम्भु, पार्वती, इन्द्र,

इकाई-३ (क) काव्यमीमांसा (राजशेखरकृता)
1, 2, 10, 14 अध्यायाः
(ख) वृत्तरत्नाकरम् (केदारभट्टविरचितम्)
प्रथम अध्यायः, अधोलिखितानि छन्दांसि च -
अनुष्टुप्, आर्या, विद्युन्माला, उपेन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रा, उपजातिः, दोधकम्, स्वागता, वंशस्थम्, तोटकम्, द्रुतविलम्बितम्, कुसुमविचित्रा, भुजङ्गप्रयातम्, स्रग्विणी, वसन्ततिलका, मालिनी, पञ्चचामरम्, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडितम्, स्रग्धरा, पुष्पिताग्रा।

इकाई-४ पद्यरचना, सद्योऽनुवादः, मौखिकी लिखित-परीक्षा च।

पाठ्यपुस्तकानि -

(1) ध्वन्यालोकः (आनन्दवर्धनाचार्यः)
ज्ञानमण्डल लिमिटेड, आज भवन, सन्त कबीर मार्ग वाराणसी-221001
(2) कान्तिचन्द्र भट्टाचार्यः
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
(3) काव्यप्रकाशः, मम्मट,
मोतीलाल, बनारसी दास दिल्ली, वाराणसी, पटना।
(4) काव्यमीमांसा - राजशेखर,
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना-800004।
(5) वृत्तरत्नाकरम् - केदारभट्ट,
मोती लाल बनारसीदास बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-7।

तृतीयसत्रम्

प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम्-III

Code-BVSAVA-308

Objectives: Following the completion of the course, students shall be able to:

- Understand the benefits, contraindications and procedure of all practices.
- Demonstrate each practice with confidence and skill.
- Explain the procedure and subtle points involved.
- Teach the yoga practices to any given group.

Basic Preparatory Asanas as per previous semester
(Sukshma asana, Yogic jogging, Dand Baithak, Surya Namaskar)

Unit-1: Asanas (As per Gherand samhita) (32)
Sidhhasana, Padmasana, Bhadrasana, Muktasana,Vajrasana,Swastikasana, Simhasana, Gomukhasana, Veerasana, Dhanurasana, Mritasana, , Guptasana, Matsyasana, Matsyendrasana, Gorakshasana, Paschimottanasana, Utakasana, Sankatasana, Mayurasana, Kukkuttasana, Kurmasana, Uttanakurmasana, Mandukasana, Uttana mandukasana Vrikshasana, Garudasana, Shalbhasana, Makarasana, Ushtrasana, Bhujangasana, Yogasana & Previous semester asanas.

Unit-2: Advance Yogasanas (8)
Ardha Baddha Padmottanasan, Saral Hasta Pdma Pindasan, Gajananasan, Padma Jhashasan, Trishoolpashasan, Ardha Padma Parivritta Parighasan, Ruchikasan-2, Pinch- Mayurasan & Previous semester asanas

Unit-3: Shatkarma (Shuddhi Kriya)
Sutra Neti, Vaman Dhauti (Kunjal Kriya), Dand Dhauti & previous semester practices

Unit-4: Pranayam, Mudra & Bandh
Sahit Pranayam, Suryabhedan Pranayam, Ujjayi Pranayam, Bhastrika Pranayam, Bhramari Pranayam, Sheetali pranayam & previous semester practices
Mudra: Nabho Mudra, Yoni Mudra, Tadagi Mudra, Shambhavi Mudra, Ashwini Mudra, Pashini Mudra, Kaki Mudra, & Previous Semester Practices

Text Book: -

- Ramdev, S., (2022), Yoga Sadhna Evam Yoga Chikitsa Rahasya. Divya Prakashan.
- Balkrishna A., (Under Publication), Yoga Vishwakosh. Divya Prakashan
- Ramdev S., (2009), Pranayam Rahasya. Divya Prakashan.

Reference Book: -

1) Balkrishna A., (2017), Yoga Vijnanam: Yoga ke goorh rahasyo ka darshanik v vaijnanik vivechan (first edition). Divya Prakashan.
2) Balkrishna A., (2007), Vijnan ki Kasauti Par Yoga (first edition). Divya Prakashan.
3) Research Publication by Patanjali Research Foundation, Divya Prakashan.
4) Sahay G.S., (), Hatha Pradipika of Swatmaram. Chaukhamba publication

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

चतुर्थसत्रम्

प्रथमपत्रम्- काशिकावृत्तिः (तृतीयाध्यायतृतीयपादः)

उणादिकोषश्च

Code- BVSAMJ-401 Credit- 5

उद्देश्य :

- उणादि तथा कर्ताभिन्नकारक संज्ञा भाव में विहित प्रत्ययों एवं खलर्थ प्रत्ययों का बोध ।
- कालातिदेश में विहित प्रत्यय लिङ् लोट् एवं तुमुन् आदि प्रत्ययों के प्रयोग कराना।

परिणामः

- उणादि शब्दों की सिद्धि एवं प्रकृति प्रत्यय विभाग को बताने में प्रवीणता आती है। औणदिक शब्दप्रक्रिया जन्य शब्दों के ज्ञान से लौकिक तथा वैदिक शब्दों के शाश्वत शब्दार्थ सम्बन्ध को स्थिरता प्रदान करता है जिसके फलस्वरूप शास्त्र एवं समाज में विकृतियों का प्रादुर्भाव नहीं होता है।
- कृत् प्रत्यय के प्रयोग से वाक्य प्रयोग में प्रवीणता आती है व अन्य ग्रन्थों में पहचानने में समर्थ होते हैं।
- किस कारक में कौन सा प्रत्यय होता है इसका परिचय देने में पारंगत होते हैं प्रत्ययों के अर्थ काल आदि के सम्यक् ज्ञान से लुप्त प्रायः शास्त्रों का जीर्णोद्धार करना व मानवता के लिए हितकारी सिद्धान्त व तत्वों की पुनर्स्थपना करता है।
- अव्युत्पन्न शब्दों के बोधन में समर्थ होते हैं एवं शब्दों के वाक्यगत अर्थ तथा वाक्य निर्माणशैली के बोध से शब्दार्थ शक्ति तथा वाक्यार्थ शक्ति का विशिष्ट ज्ञान होता है जिससे विद्यार्थी लोक में शास्त्र सम्बन्धी द्वन्द्व को नष्ट करके शास्त्रों की यथार्थता को प्रकाशित करता है।

काशिकावृत्तिः (तृतीयाध्यायतृतीयपादः) उणादिकोषश्च

इकाई-1 उणादयो बहुलम् (3.3.1)- आक्रोशे नञ्यनिः (3.3.112) **क्रेडिट-2**

उणादयो बहुलम्, भूतेऽपि दृश्यन्ते, भविष्यति गम्यादयः इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 कृत्यल्युटो बहुलम् (3.3.113) - स्मोत्तरे लङ् च... पर्यन्तम् (3.3.176) **क्रेडिट-1**

नानद्यतनवत् क्रियाप्रबन्धसामीप्ययोः, भविष्यति मर्यादावचनेऽवरस्मिन् इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 उणादिकोषः (1-3 पाद) **क्रेडिट-1**

कृवापाजिमिस्वदिसाध्यशूभ्य उण्, छन्दसीणः इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-4 उणादिकोषः (4-5 पाद) **क्रेडिट-1**

वातप्रमीः, ऋतन्यञ्जिवन्यञ्ज्यर्पिमद्य..... इत्यादीनि सूत्राणि ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
  प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
  श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर,नई दिल्ली-49।
  ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।
- उणादिकोषः- श्रीमत्स्वामीदयानन्दसरस्वतीव्याख्यासहितः, प्रकाशक-रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरयाणा।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

चतुर्थसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

द्वितीयपत्रम्- काशिकावृत्तिः (तृतीयाध्यायचतुर्थपादः)

लिङ्गानुशासनम् , फिट्सूत्राणि च

Code- BVSAMJ-402 Credit-5

उद्देश्य :

- क्त्वा और णमुल् प्रत्यय विषयक बोध तथा अन्य विधि सूत्रों से अवगत कराना।
- पाणिनीय कृतलिङ्गानुशासनम् ग्रन्थ के द्वारा शब्दों के लिङ्गों का बोध करा संस्कृत संभाषण व लेखन में समर्थ बनाना।
- फिट्सूत्र ग्रन्थ के माध्यम से स्वर विषयक ज्ञान प्रदान करना।

परिणामः

- क्त्वा और णमुलादि प्रत्ययों के ज्ञान से वाक्य प्रयोग में कुशल बनते हैं।
- वाक्य संरचना में अति महत्वपूर्ण शब्दों के लिङ्ग का विशिष्ट बोध कराने में समर्थ होते हैं।
- शब्दों की स्वर सिद्धि में पारंगता आती है।
- प्रत्ययों के कारक निर्धारण व बताने में निपुण हो जाते हैं।

काशिकावृत्तिः (तृतीयाध्यायचतुर्थपादः)

इकाई-1 धातुसम्बन्धे.... (3.4.1)- क्तोऽधिकरणे ..... पर्यन्तम् (3.4.76) **क्रेडिट-2**

धातुसम्बन्धे प्रत्ययाः, क्रियासमभिहारे लोट् लोटो..... इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 कर्तरि कृत् (3.4.67)- छन्दस्युभयथा पर्यन्तम् (3.4.117) **क्रेडिट-1**

लस्य, इत्यादीनि सूत्रानि ।

इकाई-3 लिङ्गानुशासनम् (स्त्रीलिङ्गाधिकारः, पुल्लिङ्गाधिकारः) **क्रेडिट-1**

लिङ्गम्, स्त्री, ऋकारान्ता मातृदुहितृस्वसृया..... नपुंसकलिङ्गाधिकारः, विशिष्टलिङ्गाधिकारश्च
नपुंसकम्, भावे ल्युडन्तः, निष्ठा च इत्यादीनि सूत्राणि ।
(क) सूत्रकण्ठस्थीकरणम् (ख) ससूत्रलिङ्गज्ञापनम्

इकाई-4 फिट्सूत्राणि **क्रेडिट-1**

फिषोऽन्त उदात्तः, पाटलापालङ्काम्बासागरार्थानाम् इत्यादीनि सूत्राणि ।
(क) सूत्रकण्ठस्थीकरणम् (ख) अर्थोदाहरणे (ग) स्वरज्ञापनम्

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
  प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
  श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर,नई दिल्ली-49। ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।
- लिंगानुशासनम्:-पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।
- फिट्सूत्रम्-पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

पूर्णाङ्कः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्कः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्कः-25
समयः-होरात्रयम्

चतुर्थसत्रम्

तृतीयपत्रम्- काशिकावृत्तिः (चतुर्थाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ)

Code- BVSAMJ-403 Credit-4

उद्देश्य :

- स्वादि एवं तद्धित प्रत्ययों की प्रकृति तथा स्त्रीप्रत्ययों का बोध ।
- तद्धित के अधिकार में अपत्यार्थक, चातुरर्थिक, शैषिकार्थिक तथा अन्य प्रत्ययों का बोध ।

परिणामः

- तद्धित प्रत्यय व उनकी प्रकृति को भिन्न-भिन्न पहचानने में दक्ष होते हैं।
- तद्धितान्त प्रत्ययों के प्रयोग से विशिष्ट सम्भाषण करने में समर्थ होते हैं।
- स्त्री प्रत्ययों के ज्ञान से लिंगों को पहचानने में निपुणता आती है।

काशिकावृत्तिः (चतुर्थाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ)

इकाई-1 ङ्याप्प्रातिपदिकात् (4.1.1)- दैवयज्ञिशौचि0 (4.1.81) **क्रेडिट-1**

ङ्याप्प्रातिपदिकात् इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 समर्थानां प्रथमाद्वा (4.1.82)- मनोर्जातावञ्यतौ षुक् च (4.1.161) **क्रेडिट-1**

समर्थानां प्रथमाद्वा, इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 अपत्यं पौत्रप्रभृति0 (4.1.162), घञः सास्यां0 (4.2.57), **क्रेडिट-1**

अपत्यं पौत्रप्रभृति0 इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-4 तदधीते तद्वेद (4.2.58)- कृकणपर्णाद्0 (4.2.144) **क्रेडिट-1**

तदधीते तद्वेद इत्यादीनि सूत्राणि ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
  प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
  श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।
  ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

चतुर्थसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

चतुर्थपत्रम्- काशिकावृत्तिः (चतुर्थाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ)

Code-BVSAMJ-404 Credit-4

उद्देश्यः

- तद्धित के अधिकार में शैषिकार्थिक तथा अन्य प्रत्ययों का ज्ञान।
- तत्र जातः, तत्र भवः, तत आगतः इत्यादि अनेकार्थों में एक प्रत्यय का बोध।
- तस्य विकारः, संसृष्टे, तत्र साधुः इत्यादि अनेकार्थों में होने वाले तद्धितान्त शब्दों का बोध।

परिणाम-

- तद्धित प्रत्यय और उनकी प्रकृति को पृथक्-पृथक् जाननें में निपुण हो जाते हैं।
- तद्धितान्त शब्द के प्रयोग से लेखन व सम्भाषण करने में समर्थ हो जाते हैं।
- प्रतन काल के मानवीय जीवन के मूल्य व परस्पर व्यवहार आदि अनेक विषयों से छात्र परिचित होते हैं।

चतुर्थाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ

इकाई-1 युष्मदस्मदो0 (४.३.१) - शिशुक्रन्द0 (4.3.88) क्रेडिट-1

इत्यादीनि सूत्राणि

इकाई-2सोस्य निवासः (4.3.89) - कंसीयपरश0 (4.3.165) क्रेडिट-1

इत्यादीनि सूत्राणि

इकाई-3प्राग्वहतेष्ठक् (4.4.1) - आवसथात् ष्ठल् (4.4.141) क्रेडिट-1

इत्यादीनि सूत्राणि

इकाई-4प्राग्घिताद्यत् (4.4.75) - भावे च (4.4.144) क्रेडिट-1

इत्यादीनि सूत्राणि

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
  प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
  श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर,नई दिल्ली-49।
  ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

चतुर्थसत्रम्

पंचमपत्रम्- वैदिकसाहित्यम् -I

Code-BVSAMN-405 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्यः

- प्रस्तुत वेदांश का स्मरण कराते हुए ज्ञान एवं इन्द्र की महिमा से परिचय कराना ।
- तर्कसंग्रह के माध्यम से न्याय एवं वैशेषिक दर्शन को समझने की योग्यता उत्पन्न करना।
- प्रश्नोपनिषद् के द्वारा ब्रह्म और सृष्टिक्रम का बोध कराना।
- मनुस्मृति के पठन से धर्म, तप, विद्याभ्यास और इन्द्रियसंयम के प्रति जागृति उत्पन्न कराना ।

परिणाम-

- तर्क के सामर्थ्य से सूक्ष्मतत्वों को समझने का सामर्थ्य आ जाता है ।
- उपनिषद् के तत्वों से अवगत हो कर उचित दृष्टि का विस्तार करता है ।
- उद्देश्य में उक्त तत्वों से युक्त होकर समाज में तद्विषयक ज्ञान के विस्तार से दिव्य व भव्य समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इकाई-1 काव्यशास्त्रम् (काव्यदीपिका - शिखा - 6-7) **क्रेडिट-1**

अन्यधार्मिकग्रन्थाः - (मनुस्मृतिः - अध्याय - 12)

(क) श्लोकपूर्तिः(ख) पदपदार्थज्ञापनम्

इकाई-2 वेद :- (ऋग्वेदः ज्ञानसूक्तम् इन्द्रसूक्तम्) **क्रेडिट-1**

(क) मन्त्रकण्ठस्थीकरणम्

(ख) शब्दार्थपुरस्सरं स्वशब्दैरर्थबोधनम्

(ग) ऋषिदेवताछन्दोज्ञापनम्

इकाई-3दर्शनम् :- (तर्कसंग्रहः) **क्रेडिट-1**

(क) विषयात्मकप्रश्नाः

इकाई-4 उपनिषद् (प्रश्नोपनिषद्) **क्रेडिट-1**

(क) कण्ठस्थीकरणम्

(ख) विषयात्मकप्रश्नाः

पाठ्यपुस्तकम्-

1. **काव्यदीपिका**- विद्यारत्नकान्तिचन्द्रभट्टाचार्येण संगृहीता, प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि. देहली ।
2. **ऋग्वेदः** - प्रकाशकः - रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
3. **तर्कसंग्रहः** -प्रकाशकः - चौखम्भा सुरभारती प्रकाष्ठान, वाराणसी।
4. **ईशादि नौ उपनिषद्** प्रकाशकः - आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट- 455, खारी बावली, दिल्ली।

चतुर्थसत्रम्

षष्ठपत्रम्- Spanish

Code-BVSAAE-406 Credit-2

पूर्णाङ्काः-50
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-37
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-13
समयः-होराद्वयम्

Spanish Language	
Course Objectives: ▪ Develop proficiency in speaking, listening, reading, and writing in Spanish for effectivecommunication. ▪ Build confidence in students to use Spanish in various social and professional contexts. ▪ Help students speak fluently and coherently in both formal and informal settings. ▪ Strengthen vocabulary, grammar, and pronunciation to enable students to express themselves accurately and appropriately. ▪ Develop active listening skills for better comprehension in conversations, lectures, andpresentations. ▪ Improve students' ability to understand, analyze, and interpret written texts, enhancing criticalthinking.	
Unit-1	Introduction to the language, its scope, alphabets & pronunciation Days of the Week, Months of the Year, Date & numbers (01-100) Colours Saludos Greetings; Pronoun (I, you, he, she, they etc.) Classification of Verbs (-ar/ -er/ -ir) ; concept of Conjugation & conjugation of –er,ir and ar ending verb.
Unit-2	Article&Gender ; Stationary stuffs; Number & Adjectives (personal) Ser&Estar Tener Expressions Possessive adjective;
Unit-3	Verbos : Irregular (o-ue,i-e,i-ie) Seasons; Time Directions; Negative Sentence Structure; Interrogative sentence structure La Hora (the time)
Unit-4	Verbs Irregular Uses of Hay; Parts of body; audio Demonstrative adjectives (este/esta etc.) La Casa Los Animales

Unit-5	Verbs future and sentences Tense preterite (past tense) La comida – the meals Subjentivo and Imperitivo
	Suggested books: Vivoslibro de alumno- 1-2 , Aula 1 **Website** – www.espanol.lingolia.com www.deleahora.com **App-** Lingoliaspanish Spanish dictionary

Method of Teaching & Assessment- Videos, Audio clippings, discussion, written and oral exercises

Course Specific outcomes

By the end of the course, students should be able to:

- Confidently engage in various conversations in Spanish, demonstrating clarity and fluency.
- Effectively listen to and understand spoken Spanish in different accents and contexts.
- Write clearly and correctly in Spanish for various purposes such as emails, letters and essays.
- Understand and critically analyze different types of written texts (articles, essays, literature, etc.).
- Contribute thoughtfully in group discussions, presentations, and debates.
- Deliver effective oral presentations with confidence, clarity, and the appropriate use of language.

चतुर्थसत्रम्

प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम् -IV

Code-BVSAVA-407

Objectives: Following the completion of the course, students shall be able to:

- Understand the benefits, contraindications and procedure of all practices.
- Demonstrate each practice with confidence and skill.
- Explain the procedure and subtle points involved.
- Teach the yoga practices to any given group.

Basic Preparatory Asanas as per previous semester
(Sukshma Yogic vyayam, Yogic jogging, Dand Baithak, Surya Namaskar)

Unit-1: Asanas (19)
Kati Vakrasan, Pad Dandasan, Dhanushtankarasan**,** Lasyasan, Konasan, Trikonasan, Parshvottanasan, Padma garbhasan, kukkutasan, Supta Padmasan, Supta Vajrasan, Gorakshasan, Merudandasan, Chaturangasan, purvottanasan, Supta Paschimottanasan, Kati Uttanasan, Kandharasan, Setubandhasan **& Previous semester asanas.**

Unit-2: Advance Yogasanas (10)
Supta trivikramasan, Supta Tittibhasan, Padangushtha Nasasparshasan, Omkar Asan, Padma Bakasan, Pad Skandhasan, Dwipad Skandhasan, kailashasan, Vishwamitrasan, kaundinyasan & Previous semester advance asanas

Unit-3: Shatkarma (Shuddhi Kriya)
Sutra Neti, Vaman Dhauti (Kunjal Kriya), Dand Dhauti & previous semester practices

Unit-4: Pranayam, Mudra & Bandh
Bahyavritti- Pranayam, Abhyantarvritti Pranayam, Stambhavritti Pranayam, Bahyabhyantarvishayakshepi Pranayam & previous semester practices

Hasta Mudra- Jnana Mudra, Vayu Mudra, Shoonya Mudra, Prithvi Mudra, Prana Mudra & previous semester practices

Text Book: -

- Ramdev, S., (2022), Yoga Sadhna Evam Yoga Chikitsa Rahasya. Divya Prakashan.
- Balkrishna A., (Under Publication), Yoga Vishwakosh. Divya Prakashan
- Ramdev S., (2009), Pranayam Rahasya. Divya Prakashan.

Reference Book: -

5) Balkrishna A., (2017), Yoga Vijnanam: Yoga ke goorh rahasyo ka darshanik v vaijnanik vivechan (first edition). Divya Prakashan.
6) Balkrishna A., (2007), Vijnan ki Kasauti Par Yoga (first edition). Divya Prakashan.
7) Research Publication by Patanjali Research Foundation, Divya Prakashan.
8) Arya S., (2016), Patanjal Yoga Darshan: Vyasbhashya evam Bhojvritti Sahit. Ved Yoga Charitable Trust

पञ्चमसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

प्रथमपत्रम्- काशिकावृत्तिः (पञ्चमाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ)

Code- BVSAMJ-501 Credit-4

उद्देश्य :

- तद्धित के अधिकार में भाव एवं कर्म में विहित त्वतल् आदि प्रत्ययों का बोध कराना ।
- संख्या वाचियों से पूरण अर्थ में विहित, मतुप् अर्थों में विहित तथा अन्य अर्थों में विहित प्रत्ययों का बोध कराना ।
- तद्धिताधिकार में निर्वृत्त, भृत, भूत, भावी इत्यादि विविधार्थों में विहित तद्धितान्त शब्दों का बोध।

परिणामः

- भाषा में भाव प्रत्ययों का प्रयोग कर शब्दों की निष्पत्ति करके उनका प्रयोग करने में समर्थ हो जाते हैं।
- संख्यावाची और मतुबादि अर्थों में विहित प्रत्ययों के बोध पूर्वक प्रयोग में समर्थ होते हैं।
- तद्धितान्त शब्दों के प्रयोग से लेखन व सम्भाषण करने में समर्थ हो जाते हैं।

काशिकावृत्तिः (पञ्चमाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ)

इकाई-1 प्राक् क्रीताच्छः (5.1.1)- यज्ञर्त्विग्भ्यां घखञौ (5.1.70) **क्रेडिट-1**

प्राक् क्रीताच्छः, इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 पारायणतुरायण0 (5.1.71)- ब्रह्मणस्त्वः (5.1.135) **क्रेडिट-1**

पारायणतुरायण0 इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 धान्यानां भवने.... (5.2.1)- तन्त्रादचिरापहृते (5.2.70) **क्रेडिट-1**

धान्यानां भवने .... इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-4 ब्राह्मणकोष्णिके0 ..... (5.2.71), अहंशुभमोर्युस् (5.2.140) **क्रेडिट-1**

ब्राह्मणकोष्णिके0 .... इत्यादीनि सूत्राणि ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
  प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
  श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर,नई दिल्ली-49।
  ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

पञ्चमसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

द्वितीयपत्रम्- काशिकावृत्तिः (पञ्चमाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ)

Code- BVSAMJ-502 Credit-4

उद्देश्य :

- विभक्ति संज्ञक, आतिशायिक, स्वार्थिक, समासान्त तथा अन्य अर्थों में विहित प्रत्ययों का बोध कराना ।
- असर्वविभक्ति तद्धितान्ताव्ययों का बोध कराना।
- तद्धिताधिकार में विहित विविधार्थों में होने वाले प्रत्ययों का बोध कराना ।

परिणामः

- अतिशायिक प्रत्ययों के साथ वाक्य प्रयोग में प्रवीणता प्राप्त कर एक उच्चस्तरीय संस्कृत लेखन में समर्थ हो जाते हैं।
- साहित्य में प्रयुक्त तद्धितान्तों को पहचानकर तद्धितान्तों के सही अर्थों की संगति करने में समर्थ होते हैं।
- तद्धितान्त शब्दों के प्रयोग से लेखन व सम्भाषण करने में समर्थ हो जाते हैं।
- तद्धितान्ताव्ययों का पूर्णतः बोध हो जाता है। जिससे भाषा में प्रचलित शब्दों का ज्ञान सहजता से आत्मसात् कर लेते हैं।

काशिकावृत्तिः (पञ्चमाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ)

इकाई-1 प्राग्दिशो विभक्तिः (5.3.1)- प्रकारवचने (5.3.69) **क्रेडिट-1**

प्राग्दिशो विभक्तिः, इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 प्रागिवात् कः (5.3.70)- ञ्यादयस्तद्राजाः (5.3.119) **क्रेडिट-1**

प्रागिवात् कः इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 पादशतस्य0 (5.4.1)- मद्रात् परिवापणे (5.4.67) **क्रेडिट-1**

पादशतस्य0 इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-4 समासान्ताः (5.4.68), निष्प्रवाणिश्च (5.4.160) **क्रेडिट-1**

समासान्ताः .... इत्यादीनि सूत्राणि ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
  प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
  श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर,नई दिल्ली-49।
  ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

पञ्चमसत्रम्

तृतीयपत्रम्- काशिकावृत्तिः-षष्ठाध्यायस्य प्रथमपादः

Code- BVSAMJ-503 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- धातु को द्वित्व, सम्प्रसारण, आकारादेश एवं संहिता के अधिकार में विहित सन्धि एवं अन्य कार्यों का बोध कराना।
- सन्धियों का बोध कराके संस्कृत को सन्धिविच्छेदपूर्वक पढ़ने मे समर्थ बनाना।

परिणामः

- द्वित्व और सम्प्रसारणादि कार्यों से सम्बद्ध सिद्धियों को करने में प्रवीण होते हैं।
- सन्धियों के ज्ञान से अन्य पुस्तकों के पठन-पाठन में सरलता व सहजता आती है।
- शब्दों के स्वर निर्देश में पारंगत होकर वेदादि शास्त्रों को पढ़ने में निपुण हो जाते हैं।
- स्वर भिन्नता से अर्थ परिवर्तन को समझा पाते हैं।

काशिकावृत्तिः-षष्ठाध्यायस्य प्रथमपादः

इकाई-1 एकाचो द्वे..... (6.1.1)- विभाषा परे (6.1.44) **क्रेडिट-1**

एकाचो द्वे प्रथमस्य, अजादेर्द्वितीयस्य, इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 आदेच उपदेशेऽशिति (6.1.45)- औतोऽम्शसोः (6.1.94) **क्रेडिट-1**

आदेच उपदेशेऽशिति, न व्यो लिटि, इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 एङि पररूपम् (6.1.95)- पारस्कर प्रभृतीनि च..... (6.1.157) **क्रेडिट-1**

एङि पररूपम्, ओमाङोश्च इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-4 अनुदात्तं..... (6.1.158) - समासस्य (6.1.223) **क्रेडिट-1**

अनुदात्तं पदमेकवर्जम्, कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्त इत्यादीनि सूत्राणि ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
  प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
  श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर,नई दिल्ली-49।
  ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
  व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

पञ्चमसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

चतुर्थपत्रम् - काशिकावृत्तिः-षष्ठाध्यायस्य द्वितीयतृतीयपादौ

Code-BVSAMJ-504 Credit-4

उद्देश्य :

- उदात्त स्वरित एवं अनुदात्त स्वर सम्बन्धि बोध व प्रयोग में समर्थ बनाना।
- उत्तरपद के रहते अलुग् तथा अन्य कार्यों का बोध कराना व प्रयोगों को सिखाना।

परिणामः

- स्वर कार्यों का ज्ञान होता है तथा स्वयं स्वर निर्देशन में कुशल हो जाते हैं।
- विभिन्न शास्त्रों में प्रदत्त मन्त्रों की स्वर सम्बन्धी त्रुटियों को पहचान कर स्वयं शोधन कर पाता है शास्त्र परंपरा को अक्षुण्ण रख पाते हैं।
- उदात्त अनुदात्त आदि स्वरों के परिवर्तन से होने वाले अर्थ परिवर्तन को समझकर संस्कृत निहितार्थ का बोध कर सकेगें।

काशिकावृत्तिः-षष्ठाध्यायस्य द्वितीयतृतीयपादौ

इकाई-1 बहुव्रीहौ प्रकृत्यापूर्वपदम् (6.2.1)- निष्ठोपसर्गपूर्व.... (6.2.110) **क्रेडिट-1**

बहुव्रीहौ प्रकृत्यापूर्वपदम्, तत्पुरुषे तुल्यार्थतृतीयासप्तम्युपमानाव्यय.... इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 उत्तरपदादिः (6.2.111)- परादिश्छन्दसि बहुलम् (6.2.199) **क्रेडिट-1**

उत्तरपदादिः, कर्णो वर्णलक्षणात्, संज्ञौपम्ययोश्च इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 अलुगुत्तरपदे (6.3.1)- उगितश्च (6.3.44) **क्रेडिट-1**

अलुगुत्तरपदे, पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः, ओजः सहोऽम्भस्तमसस्तृतीयायाः इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-4 आन्महवः समानाधिकरण जातीययोः, द्व्यष्टनः सङ्ख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः । **क्रेडिट-1**

- सम्प्रसारणस्य (6.3.139)

सहस्य सः संज्ञायाम्, ग्रन्थान्ताधिके च, द्वितीये चानुपाख्ये इत्यादीनि सूत्राणि ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
  प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
  श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर, नई दिल्ली-49।
  ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
  व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

पञ्चमसत्रम्

पञ्चमपत्रम्- वैदिकसाहित्यम् -II

Code-BVSAMN-505 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- वेदों में निहित गूढतत्वों से अवगत कराना।
- सांख्य के मूलभूत सिद्धान्तों से अवगत कराना।
- तैत्तिरीयोपनिषद् में प्रोक्त शीक्षावल्ली के माध्यम से शिक्षा के मूलभूत तत्वों से अवगत कराना।

परिणाम-

- वेदनिहिततत्वों से अवगत होकर समाज में तद्विषयक ज्ञान का विस्तार करता है ।
- सांख्य दर्शन के सिद्धान्तों से अवगत होकर स्वयं को एवं समाज को सांख्य के प्रकाश से प्रकाशित करता है।
- शिक्षा के मौलिक तत्त्वों से जीवन का युक्त करके समाज में शिक्षा के स्वरूप को प्रकाशित करना।

इकाई-1 वेद :- (अथर्ववेदः - पृथिवीसूक्तम्) **क्रेडिट-1**

(क) मन्त्रकण्ठस्थीकरणम्
(ख) शब्दार्थपुरस्सरं स्वशब्दैरर्थबोधनम्
(ग) ऋषिदेवताछन्दोज्ञापनम्

इकाई-2 दर्शनम् :- (सांख्यकारिका) **क्रेडिट-1**

(क) कण्ठस्थीकरणम्
(ख) अर्थबोधनम्
(ग) विषयात्मकप्रश्नाः

इकाई-3 उपनिषद् - (तैत्तिरीयोपनिषद्) **क्रेडिट-1**

(क) कण्ठस्थीकरणम्
(ख) विषयात्मकप्रष्ठनाः

इकाई-4 अन्यधार्मिकग्रन्थाः -नीतिशतकम् **क्रेडिट-1**

(क) श्लोककण्ठस्थीकरणम्
(ख) पदपदार्थज्ञापनम्

सहायकग्रन्थाः -

1. **अथर्ववेदः** - प्रकाशकः - वैदिक पुस्तकालय, अजमेर, राजस्थान।
2. **सांख्यकारिका**-प्रकाशकः - चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
3. **एकादशोपानिषद्** - डॉ. सत्यव्रतसिद्धान्तालंकार
4. **नीतिशतकम्** -प्रकाशकः - चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

पञ्चमसत्रम्

षष्ठपत्रम्- समन्वितचिकित्सापद्धतिः

Code-BVSAMN-506 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धति के समन्वित् स्वरूप का बोध कराना ।
- समन्वित चिकित्सा पद्धति के व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा साध्य एवं असाध्य रोगो का निदान।
- योग, आयुर्वेद, पञ्चकर्म, षट्कर्म, नेचुरोपैथी, आहार चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, एक्यूपंचर, एक्यूप्रेशर एवं फिजियो थैरेपी जैसे समन्वित् भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धतियों के सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक बोध द्वारा योग्य एवं प्रशिक्षित व्यक्तित्व का निर्माण करना।

परिणाम :

- समन्वित चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षित विद्यार्थी समाज में साध्य-असाध्य रोगों से पीडित रोगियों को उपचार देकर उन्हें सम्पूर्ण आरोग्य का लाभ प्रदान करता है एवं भारतीय पुरातन चिकित्सा व्यवस्था के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है ।
- सेवा निष्ठ आजीविका का आलम्बन लेकर स्वयं आत्मनिर्भर होता हुआ अन्यों को भी रोजगार परक सेवा क्षेत्र में नियोजित करता है, उपकार परख उपचार की एक स्वस्थ परम्परा का संवाहक बनकर समाज को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के मार्ग पर अग्रसर करता है ।

प्रथम इकाई- पञ्चकर्म- परिचय, प्रकार एवं विभिन्न रोगों में उपचार **क्रेडिट-1**

1) वमन
2) विरेचन
3) नस्य
4) बस्ति
5) रक्तमोक्षण

अभ्यंग, शिरोधारा, आंतरिक बस्ति, बाह्य बस्ति, अक्षितर्पण, नस्य, रक्तमोक्षण श्रृंगी, वातमोक्षण, स्नेहन, स्वेदन।

द्वितीय इकाई- षट्कर्म-परिचय, प्रकार एवं विभिन्न रोगों में उपचार **क्रेडिट-1**

1) जलनेति
2) रबड़नेति
3) कुंजल क्रिया
4) त्राटक
5) शंखप्रक्षालन

तृतीय इकाई- एक्यूप्रेशर **क्रेडिट-1**

परिचय, रोगानुसार, चिकित्सीय लाभ

1) हस्त एवं पैर के विभिन्न मर्म स्थानों के द्वारा चिकित्सा

चतुर्थ इकाई- प्राकृतिक चिकित्सा-सामान्य परिचय एवं रोगानुसार चिकित्सीय लाभ **क्रेडिट-1**

1) मिट्टी चिकित्सा
2)जल चिकित्सा
3) सूर्य चिकित्सा
3) आहार चिकित्सा
4) आकाश चिकित्सा (उपवास)
4) प्राण चिकित्सा (वायु)

पाठ्यपुस्तकम्- उपचार पद्धति, प्रकाशन- द्विव्य प्रकाशन, द्विव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, हरिद्वार।

पञ्चमसत्रम्

पञ्चमपत्रम्- प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम् -V

Code-BVSAMN-507

Objectives: Following the completion of the course, students shall be able to:

- Understand the benefits, contraindications and procedure of all practices.
- Demonstrate each practice with confidence and skill.
- Explain the procedure and subtle points involved.
- Teach the yoga practices to any given group.

Basic Preparatory Asanas as per previous semester
(Sukshma asana, Yogic jogging, Dand Baithak, Surya Namaskar)

Unit-1: Asanas (14)
Garudasan, Hasta Padangushthasan, Trikonasan, Utthita Trikonasan, Parivritta Parshva Konasan, Ardha Chandrasan, Yoga Mudrasan 1, 2, Vakrasan, Ardha Matsyendrasan, Brahmacharyasan, Tolangulasan, Utkatasan, Marjarasan, & Previous semester asanas.

Unit-2: Advance Yogasanas (10)
Baddha Padmasan, Ardha Baddha Paschimottanasan, Saraghasan, Utthita Tittibhasan, Rajkapotasan, Trivikramasan, Malayasan, Sarasasan, Pakshi Asan, Ashta Vakrasan & Previous semester asanas

Unit-3: Shatkarma (Shuddhi Kriya)
Sutra Neti, Dand Dhauti, Vastra Dhauti, Nauli, Sheetkram Kapalbhati & previous semester practices

Unit-4: Pranayam, Mudra & Bandha
8 Pranayam as per the protocol of PYP & previous semester practices
Hasta Mudra: Apan Mudra, Apan Vayu Mudra, Surya Mudra, Varun Mudra, Linga Mudra, Dharana Shakti Mudra

Text Book: -

- Ramdev, S., (2022), Yoga Sadhna Evam Yoga Chikitsa Rahasya. Divya Prakashan.
- Balkrishna A., (Under Publication), Yoga Vishwakosh. Divya Prakashan
- Ramdev S., (2009), Pranayam Rahasya. Divya Prakashan.
-

Reference Book: -

9) Balkrishna A., (2017), Yoga Vijnanam: Yoga ke goorh rahasyo ka darshanik v vaijnanik vivechan (first edition). Divya Prakashan.
10) Balkrishna A., (2007), Vijnan ki Kasauti Par Yoga (first edition). Divya Prakashan.
11) Research Publication by Patanjali Research Foundation, Divya Prakashan.

बी.ए. ऑनर्स-संस्कृतव्याकरणम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

षष्ठसत्रम्

प्रथमपत्रम् - काशिकावृत्तिः -षष्ठाध्यायचतुर्थपादः

Code- BVSAMJ-601 Credit-4

उद्देश्य :

- अङ्ग के अधिकार में निर्दिष्ट दीर्घ, असिद्धवत् आर्धधातुक विषयक तथा भसंज्ञा सम्बन्धि कार्यों का बोध।

परिणामः

- शास्त्रों में प्रयुक्त होने वाले क्लिष्ट शब्दों का प्रकृति प्रत्यय विभागपूर्वक अर्थों का बोधन कर प्राचीन शास्त्रों के संरक्षण व सम्वर्धन में सहायक होते हैं।
- धातुरूपों में होने वाले विभिन्न परिवर्तनों का बोध कर शब्दवैविध्य तथा अर्थवैचित्र्य के माध्यम से शास्त्रों का सत्यार्थ प्रदान करता है।

काशिकावृत्तिः -षष्ठाध्यायचतुर्थपादः

इकाई-1 अङस्य (6.4.1)- सनः क्तिचि लोपश्चास्यान्यतरस्याम् (6.4.45) **क्रेडिट-1**

अङस्य, हलः, नामि, न तिसृचतसृ इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 आर्धधातुके (6.4.46)- हुश्नुवोः सार्वधातुके (6.4.87) **क्रेडिट-1**

अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिक लोपो झलि क्ङिति इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 भुवो वुग् लुङ्लिटोः (6.4.88)- अर्वणस्त्रसावनञः (6.4.127) **क्रेडिट-1**

ऊदुपधाया गोहः, दोषो णौ इत्येवमादयः

इकाई-4 मघवा बहुलम् (6.4.128)-ऋत्व्यवास्त्व्य..... (6.4.175) **क्रेडिट-1**

मघवा बहुलम्, भस्य, पादः पत्, वसोः सम्प्रसारणम् इत्यादीनि सूत्राणि ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
  प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
  श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर,नई दिल्ली-49।
  ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

षष्ठसत्रम्

द्वितीयपत्रम् - काशिकावृत्तिः - सप्तमाध्यायस्य प्रथमद्वितीयतृतीयपादाः

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

Code-BVSAMJ-602 Credit-4

उद्देश्य :

- तिङ् तथा सुप् प्रत्ययों से सम्बद्ध आदेश एवं आगमों के विधान का सम्यक् ज्ञान कराना।
- परस्मैपदपरक वृद्धि, आर्धधातुक प्रत्ययों को इट् निषेध, इट् विधि, तथा युष्मद् अस्मद् इत्यादि सर्वनाम शब्दों को विभक्ति के परे रहते कार्यों के विधान का बोध ।
- पूर्वोत्तरपद वृद्धि, धातु एवं विभक्ति सम्बन्धी विविध कार्यों का बोध ।

परिणामः

- संस्कृत भाषा में प्रयुक्त होने वाले सुबन्त और तिङन्त पदों के माध्यम से भाषा के लालित्य से साहित्यिक जगत में नई रचनायें कर सकते हैं।
- तिङन्त में होने वाले विविध कार्यों का बोध हो जाने से अन्य शास्त्रों के गाम्भीर्य को सरलता से प्रकाशित कर सकेंगे।

काशिकावृत्तेः सप्तमाध्यायस्य प्रथमद्वितीयतृतीयपादाः

इकाई-1 युवोरनाकौ (7.1.1)- शप्श्यनोर्नित्यम् (7.1.81) **क्रेडिट-1**

युवोरनाकौ, आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-2 सावनहुहः (7.1.82)- यमरमनमातां सक् च (7.2.73) **क्रेडिट-1**

सावनहुहः , सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु, इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-3 स्मिपूङ्रञ्ज्वशां सनि (7.2.74)-आदाचार्य्याणाम् (7.3.49) **क्रेडिट-1**

स्मिपूङ्रञ्ज्वशां सनि, देविकाशिंशपादित्यवाड्दीर्घसत्रश्रेयसामात्, इत्यादीनि सूत्राणि ।

इकाई-4 ठस्येकः (7.3.50)-आङो नास्त्रियाम् (7.3.119) **क्रेडिट-1**

ठस्येकः , इत्यादीनि सूत्राणि ।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
  प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
  श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर,नई दिल्ली-49।
  ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

षष्ठसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

तृतीयपत्रम् - काशिकावृत्तिः सप्तमाध्यायस्य चतुर्थपादः, अष्टमाध्यायस्य च प्रथमद्वितीयपादौ

Code-BVSAMJ-603 Credit-4

उद्देश्य :

- धातु एवं अभ्यास सम्बन्धि विविध कार्यों का ज्ञान ।
- पदसम्बन्धि द्वित्व, पद से उत्तर युष्मद् अस्मद् को होने वाले आदेश एवं स्वरविषयक बोध ।
- पूर्वत्रासिद्ध प्रकरण के अन्तर्गत निष्ठा, प्लुत उदात्त एवं संहिता विषयक विविध कार्यों का बोध कराना।

परिणामः

- धातु सम्बन्धि विविध एवं अभ्यास के सम्पूर्ण कार्यों से अवगत हो जाता है।
- संस्कृत भाषा में प्रयुक्त होने वाले वीप्सादि अर्थों का बोध प्राप्त करता है व लालित्यपूर्ण संस्कृत सम्भाषण कर पाते हैं।
- विविध शास्त्रों में प्रयुक्त शब्दों के नकार लोप, रुत्वादि कार्यों को जानकर उनके स्पष्ट अर्थों को अधिगम करते हुए निर्भ्रान्त बोध कर शास्त्रों के स्पष्ट व शुद्ध स्वरूप को जानकर अपने जीवन को उन्नत बनाता है।

काशिकायाः सप्तमाध्यायस्य चतुर्थपादः, अष्टमाध्यायस्य च प्रथमद्वितीयपादौ

इकाई-1 णौ चङ्युपधाया... (7.4.1)- अत आदेः (7.4.70) **क्रेडिट-1**

णौ चङ्युपधाया..., इत्यादीनि सूत्राणि।

इकाई-2 तस्मान्नुड् द्विहलः (7.4.71)- शेषे विभाषा (8.1.50) **क्रेडिट-1**

तस्मान्नुड् द्विहलः, शेषे विभाषा, इत्यादीनि सूत्राणि।

इकाई-3 गत्यर्थलोटा0 (8.1.51) षढोः कः सि (8.2.41) **क्रेडिट-1**

गत्यर्थलोटा0, पूर्वत्रासिद्धम्, इत्यादीनि सूत्राणि।

इकाई-4 रदाभ्यां निष्ठातो न0 (8.2.42)-तयोर्य्वावचि संहितायाम् (8.2.108) **क्रेडिट-1**

रदाभ्यां निष्ठातो न0, इत्यादीनि सूत्राणि।

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
  प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
  श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर,नई दिल्ली-49।
  ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

षष्ठसत्रम्

चतुर्थपत्रम् - काशिकावृत्तिः - अष्टमाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ पारिभाषिकश्च

Code-BVSAMJ-604 Credit-4

उद्देश्य :

- संहिता में होने वाले सन्धि आदि विविध कार्यों का बोध।
- संस्कृत भाषा में प्रयुक्त सकार और नकार के परिवर्तितरुप षकार व णकार का पूर्णतः से बोध करना।
- व्याकरणशास्त्र में अनियम के प्रसङ्ग में नियम करने वाली परिभाषाओं का ज्ञान।

परिणामः

- संहिता सम्बन्धि विविध कार्यों के ज्ञान से लेखन, सम्भाषण, और अध्ययन में दक्ष होते हैं।
- भाषा में प्रचलित विसर्जनीयविकार, षत्व नत्व आदि के ज्ञान से शब्दों को जानना सहज हो जाता है।
- परिभाषाओं के ज्ञापक, वाचनिक, न्यायमूलादि पक्षों के ज्ञान से व्याकरण शास्त्र के गूढविषयों को सहजता से आत्मसात् कर लेते हैं।

अष्टमाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ, पारिभाषिकश्च

इकाई-1 मतुवसो रु0 .... (8.3.1) - निव्यभिभ्यो0 (8.3.119) क्रेडिट-1

इकाई-2 रषाभ्यां नो णः (8.4.1) - अ अ (8.4.67) क्रेडिट-1

इकाई-3 व्याख्यानतो0 .... (पा0 1) - लुगविकरण0 .... (पा0 80) क्रेडिट-1

इकाई-4 प्रकृतिग्रहणे0 (पा0 81) - स्वरविधौ0 (पा.158) क्रेडिट-1

इत्यादिपरिभाषाः

पाठ्यपुस्तकम्-

- काशिकावृत्ति- श्रीवामनजयादित्यविरचिता
  प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
  श्रीमद्दयानन्दवेदार्षमहाविद्यालयन्यास, 119 गौतमनगर,नई दिल्ली-49।
  ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी।
- पारिभाषिक - सम्पादक आचार्य प्रधुम्न जी, दिव्य प्रकाशन पतंजलि योगपीठ।

सहायकग्रन्थ -

- वार्त्तिकप्रकाश- आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक- चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी।
- व्याकरणकारिकाप्रकाश- पं. सुदर्शनदेवाचार्य, प्रकाशक- हरियाण साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर हरयाणा।

षष्ठसत्रम्

पंचमपत्रम् - ज्योतिषशास्त्रम् , वैदिकसाहित्यञ्च-III

Code-BVSAMN-605 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- काव्यदीपिका में श्रीकान्तिचन्द्रभट्टाचार्य के द्वारा दृश्यश्रव्य काव्य के विभाग व लक्षण, अभिनय के स्वरूप तथा उसके भेदों का बोध।
- गीता के 16वें 17वें अध्याय के माध्यम से दैवी आसुरी सम्पद् तथा श्रद्धात्रय विभाग का भलीभाँति बोध कराना।

परिणामः

- दृश्यश्रव्य काव्य और अभिनय के भेदों को पहचान कर अभिनय की महत्ता से समाज को परिचित करा पाता है।
- दैवी सम्पत् से युक्त होकर एवं श्रद्धा के तत्व को समझकर समाज में तद्विषयक ज्ञान का विस्तार से दिव्य व भव्य समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इकाई-1 पंचांग परिचय - (1. तिथि, 2. वार, 3. नक्षत्र, 4. योग, 5. करण) **क्रेडिट-1**

अयन, गोल, पक्ष, ऋतु, मासादि परिचय ।

राशि परिचय - राशि स्वरूप, राशि स्वामि, राशि वर्ण, राशि स्थान।

काल विचार - काल पुरुष के अङ्गों में मेषादि राशियों का न्यास।

नक्षत्र परिचय - नक्षत्र अन्धादि संज्ञा, नक्षत्र देवता, मूलसंज्ञक नक्षत्र, पंचक नक्षत्र, आदि।

सिदधान्त, संहिता. होरा परिचय

इकाई-2 ज्योतिष शास्त्र का परिचय ..... **क्रेडिट-1**

ज्योतिष शास्त्र का स्वरुप - ज्योतिष शास्त्र का उद्भव, ज्योतिष शास्त्र का स्वरुप, ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता, ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्तक ।

द्वादश भाव विचार तनु, धन, सहज, बन्धु, पुत्र, रिपु, पत्नी, मृत्यु, धर्म, कर्म, आय, व्यय भाव।

दशा परिचय - विंशोत्तरी दशा, अष्टोत्तरी दशा, योगिनी दशा।

नवविध काल मानम् - (स्थूलकाल) 1. ब्रम्हमान, 2. दिव्यमान, 3. पित्र्यमान, 4. प्राजापत्यमान, 5. गौरवमान, 6. सौरमान, 7. सावनमान, 8. चान्द्रमान 9. नाक्षत्रमान।

इकाई-3 काव्यशास्त्रम्- (काव्यदीपिका शिखा 8, अष्टं शिखालोकश्च) **क्रेडिट-1**

(क) विषयात्मकप्रश्नाः

इकाई-4 श्रीमद्भगवद् गीता (अध्याय-16, 17) **क्रेडिट-1**

दैवी सम्पद का लक्षण, आसुरी सम्पद का लक्षण इत्यादि। श्रद्धात्रय विभाग इत्यादि।

(क) श्लोकपूर्तिः (ख) पदपदार्थज्ञापनम्

पाठ्यपुस्तकम्-

- **काव्यदीपिका**-विद्यारत्नकान्तिचन्द्रभट्टाचार्येण संगृहीता, प्रकाशक- मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि. देहली।
- **श्रीमद्भगवद् गीता** - दिव्य प्रकाशन

षष्ठसत्रम्

लघुशोधप्रबन्धः

Code-BVSARE-606 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

1. लघु शोध प्रबन्ध द्वारा लेखन एवं चिन्तन प्रक्रिया का विकास कराना।
2. विद्यार्थी को विश्लेषणात्मक कौशल की अभिवृद्धि कराना।
3. शोध प्रक्रिया एवं लेखन में अभिवृद्धि कराना।

परिणाम-

1. लघु शोध प्रबन्ध द्वारा विद्यार्थियों में संदर्भ ग्रन्थों की जानकारी होगी।
2. शोध प्रक्रिया को समझने में सहायता मिलेगी।
3. विभिन्न मतों एवं सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन में अभिवृद्धि होगी।

Unit 1

Introduction and definition to the Research Methodology.

Unit 2

Research Problem, purpose and process/steps.

4. Title
5. Abstract
6. Introduction
7. Literature Review
8. Objectives
9. Hypothesis
10. Methodology
11. Outcomes/Result
12. References

Unit 3

Dissertation Writing. (100 page minimum)

निर्धारित पाठ्य पुस्तक-

Research Methodology: Ranjeet Kumar Publisher Pearson Education India 2005.

षष्ठसत्रम्

प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम् -VI

Code-BVSAVA-607

Objectives: Following the completion of the course, students shall be able to:

- Understand the benefits, contraindications and procedure of all practices.
- Demonstrate each practice with confidence and skill.
- Explain the procedure and subtle points involved.
- Teach the yoga practices to any given group.

Basic Preparatory Asanas as per previous semester

(Sukshma yogic vyayam, Yogic jogging, Dand Baithak, Surya Namaskar)

Unit-1: Asanas (18)

Yogamudrasan, Supta Padmasan, Mandukasan, Shashakasan, Janushirasan, Marichayasan, kurmasan, Merudandasan, Vrishabhasan, Konasan, Trikonasan, Ardha Parshvottanasan, Parshvottanasan, Uttan Padasan, Naukasan, Jatharasan, Viparit Naukasan, Shalabhasan & Previous semester asanas.

Unit-2: Advance Yogasanas (10)

Purna Shalabhasan, Gand Bherundasan, Supta Dimbasan, Supta Trivikramasan, Kokilasan, Bakasan, pratyanchasan, Tandavasan, Pashasan, Vishwamitrasan, & Previous semester asanas

Unit-3: Shatkarma (Shuddhi Kriya)

Sutra Neti, Dand Dhauti, Vastra Dhauti, Nauli, Sheetkram Kapalbhati & previous semester practices

Unit-4: Pranayam & Mediatation

8 Pranayam as per the protocol of PYP & previous semester practices

Nabhi-Chakra Dhyan, Kanthakoop Dhyan, Hriday Dhyan, Ajna Chakra Dhyan, Gayatri Dhyan

Text Book: -

- Ramdev, S., (2022), Yoga Sadhna Evam Yoga Chikitsa Rahasya. Divya Prakashan.
- Balkrishna A., (Under Publication), Yoga Vishwakosh. Divya Prakashan
- Ramdev S., (2009), Pranayam Rahasya. Divya Prakashan.

Reference Book: -

- Balkrishna A., (2017), Yoga Vijnanam: Yoga ke goorh rahasyo ka darshanik v vaijnanik vivechan (first edition). Divya Prakashan.
- Balkrishna A., (2007), Vijnan ki Kasauti Par Yoga (first edition). Divya Prakashan.
- Research Publication by Patanjali Research Foundation, Divya Prakashan.